||सतनाम के मानने वाले एक हो ||

अखिल भारतीय सतनाम संस्कृति
पर
दो दिवसीय साहित्य एवं कला सम्मेलन

सन्त महापुरूषों का एक मात्र वैचारिक क्रान्ति अभियान

तिथी ः दिनांक 10 व 11अगस्त 2013 दिन शनिवार व रविवार सुबह 10 बजे से

स्थान ः सिम्बल कांप्लेक्स तेलीबांधा रायपुर छत्तीसगढ़

आदरणीय संत जनों !

जो भिज्ञ हैं वे हमारे अग्रज है और जो अनभिज्ञ है वे सभी हमारे ज्येष्ठ श्रेष्ठ है सभी आदर के पात्र है। हम कहना चाहते है कि आज पृथ्वी एक थाली नहीं वरन् प्राकृतिक सत पर टिका, अपने कील पर घूमने वाली, अण्डाकार ग्रह जो सौर्यमण्डल का एक सदस्य है जहॉ सूर्य सोलह घोड़ों के रथ पर सवार करने वाला नहीं बल्कि आग का बहुत बड़ा गोला है जो धरती से लाखों गुना बड़ा करोड़ो मील दूर है जिसे कोई हनुमान या बंदर सेव समझकर नहीं निगल सकता। पाषाण युग से चल कर वैज्ञानिक युग तक मानव समाज लंबी सीढ़ी पार कर, आज कल्पना की जगह व्यवहारिकता ने ले ली है। विज्ञान ने सारे चमत्कारों का राज खोल कर रख दिया है। अब श्रृष्टिकर्ता, अथवा नियंता जो किसी चार–मुहॅ, आठ हाथ, बहुभुजा वाले या शेर की खाल ओढ़े कोई अजूबा प्राणी के हाथ होने का भ्रम टूट चूका है और वर्तमान प्रजातांत्रिक भारत का निर्माण एवं विकास मानव प्राणी द्वारा स्वयं अपने बुद्धि और विवेक से लगातार आसमान छूने लगा है। आज चांद सूरज किसी ईश्वर नामक यंत्र का आंख नहीं बल्कि वे भी धरती की तरह एक ग्रह हैं। युग बदल रहा है अब शक्ति और भक्ति के नाम पर चल रहा राजशाही का जमाना बदल कर जन, गण, मन में विलीन हो चला है। अब कोई मंत्र या किसी यज्ञ के प्रसाद से बच्चा पैदा नहीं होता और न ही कोई भद्र महिला मुख या कान से अप्राकृतिक बच्चा पैदा करती है।

ये सब हमे उन साहित्यों से पता चलता है जो किसी निहीत स्वार्थ से किसी विशिष्ट व खास वर्ग के हित में लिखा गया है जो जन हितकारी नही प्रतीत होता। पहले नियोग प्रथा प्रचलित था पर आज विज्ञान का देन है कि ई वी एम पद्धति से कृत्रिम गर्भधान कराया जाता है। किसी संतोषी के हाथ से आज कोई आग का गोला नही निकलता, न ही कोई सुदर्शन चक्र चलाने वाला दिखाई पड़ता है ये सब काल्पनिक ब्रह्माश्त्र

बेअसर हो गया है। तीर तरकस के बदले आज मशीन गन तोप से लेकर परमाणु बम से युद्ध होने लगे हैं जो मानव रहित विमानों द्वारा रिमोट से चलता है। आज वर्षात इन्द्र की मर्जी से नहीं बल्कि मौसम की जानकारी सेटेलाइट से होता है। केदारनाथ, अमरनाथ या स्वर्ग की सीढ़ी नापने वाले इसी धरती में खप कर राख की ढेर बन गये है और सारा भ्रम टूटने लगा है।

शिक्षा के आधिपत्य का लाभ लेते हुए भक्तिकाल के कवि लेखकों व साहित्यकारों ने रस, छन्द व अलंकार के साथ बहुवृहि व अतिशयोक्ति समास का उपयोग करते हुए यह भी भूल गये कि वे क्या लिख रहे है और भविष्य में इसका क्या परिणाम होगा। फल्स्वरूप आज समाज में भयानक भ्रम की स्थिति व्याप्त हो गयी है। समाज को मानसिक द्वन्द में उलझाकर भयपूर्ण वातावरण पैदा करने की भरपूर शैतानी कोशिश नजर आता है। वैदिक साहित्यों में भक्ति और दासता का अनूठा मेल नजर आता है जिसमें तिल का ताड़ बनाना पालतू सामंती भाठों का काम रहा है। जहॉ राजशाही ताकत को एक तरफ बढ़ा चढ़ा कर ईश्वरतुल्य बताया गया है वही दूसरी ओर कर्मफल के आड़ में जन मानस को पशु तुल्य जीवन जीने के लिए बाध्य किया गया है ताकि भोली भाली जनता राजशाही के खिलाफ विद्रोह न कर सके। आजादी के 66 साल बाद आज भी जनता को मुॅह पेट में व्यस्त रखते हुए उनकी आवाज को दबाने का भरपूर कयास नजर आता है ताकि जनता स्वेच्छा से दासता का जीवन जीने में तत्पर रहे। अतः प्राचीन वैदिक साहित्य पथ प्रदर्शक न बनकर शोषकों का औजार दृष्टिपात होता है जिसमें सामंती, पुरोहित व व्यापारी तीनों वर्ग लाभान्वित होते नजर आते है। हमें ऐसे साहित्यों से सबक लेते हुए समाज को सजग करना होगा।

यह जानते हुए कि अंधेरे कोठरी में काली बिल्ली नही है फिर भी उसे ढूढ़ने की प्रयास में कुछ लोग निरंतर लगे हुए है। दिन भर कड़कते धूप व बरसते पानी में भींगते हुए पेट की भूख मिटाने में जनता का सारा खून सूख गया फिर भी अगले जनम को सफल बनाने की होड़ में, इस जनम को नरक की गर्त में डाले हुए, कल्पना की दौड़ में भूईया नापते –नापते न जाने कितनी पीढ़ियॉ बीत गयी, किसी ने उस नियंता को न तो अब तक देख पाये और न ही कोई वहॉ पहुॅच पाया। मृगतृष्णा से कभी प्यास बुझा है। केवल मन की ऊॅची उड़ान भरते हुए चारों धाम घूमने के बावजूद कहीं भी मन को शांति नहीं मिल पायी और वापस थक हार कर अपने किस्मत को कोसते रहते हैं। शक्ति की भक्ति में नवराता, जगराता करते शदियॉ बीत गई, हम वहीं के वहीं रह गये और पूंजीपति, व्यापारी व पुरोहित वर्ग लोटा लेकर आये और आज दिन दुगुना रात चौगुना माला माल होते जा रहे हैं। यह कैसी विडंबना है कि मूर्ति पूजा की विरोध करने वालों की ही मूर्ति लगाकर उन्हें ही पुरोहिती जाल में फॅसा दिया जाता है। ये कैसा संस्कृति और सभ्यता है जहॉ चारों ओर शोषण ही शोषण है और इनसे निजात पाने का कहीं कोई रास्ता नहीं सूझता।

परिवर्तन प्रकृति का नियम है। प्रकृति पल पल बदल रहा है आज जो हम देख रहे हैं यह जरूरी नही कि कल भी वह हमें उसी रूप में दिखाई देगा। हमें इस परिवर्तन को समझने के लिए सत–चेतना की आवश्यकता है। हमें चित से चेतना तक और चेतना से प्रबुद्ध की दिशा में वक्त के साथ लगातार बढ़ते रहना है। आज हम **21**वी शदी के आधुनिकवाद के दौर से गुजर रहे है। आने वाला कल इससे भी ज्यादा प्रगतिशील होगा। आज विश्व प्रगतिहासिक युग के दौर से गुजर रहा है और दुनिया छोटे से ग्लोब में सिमट कर रह गयी है। मोबाइल, कंप्यूटर, टेलीवीजन व आधुनिक आवागमन के साधन ने विश्व को एक छोटा सा गोला बना दिया है। हमारा भारतीय समाज अभी शदियों पीछे है और रूढ़िवाद व वैदिक कर्म—काण्ड के आड़ में अज्ञानता और अन्धविश्वास के काले साये से ग्रसित शोषण का शिकार बना हुआ है। मानवता आज दानवता के हाथों कराह रही है। चारों ओर पुरोहितवाद का शिकंजा कसा हुआ है। हर तरफ धर्म मानव कल्याण के बदले धंधा व व्यापार बन गया है। पाप– पुण्य, स्वर्ग –नरक, करम– धरम के भेड़ चाल व चकाचौंध में कोई भी रास्ता साफ दिखाई नहीं पड़ रहा है।

महामानव बुद्ध, संत कबीर, गुरू नानक, संत बीरभान, संत जगजीवनदास, गुरू घासीदास, महात्मा ज्योतिराव फूले से लेकर डा. भीमराव अम्बेडकर तक सबने दुखी मानवता की चीख– पुकार अपने कानों से सुना है। सबने जगह– जगह दुखी जनता को अपने –अपने तरीके से एक मात्र निर्वाण व मुक्तिपथ सतनाम चेतना की ओर ले जाने का अथक प्रयास किया है। आज हम सब उनके चीर रीड़ी है जो तत्कालिन रूढ़िवादी व्यवस्था के खिलाफ संघर्ष करते हुए, आत्मा– परमात्मा और पुनर्जन्म को नकारते हुए स्वर्ग –नरक जैसे कर्म काण्ड व अंधविश्वास से दूर मानव समाज में नव चेतना जागृत कर उनको लगातार ऊपर उठाने का प्रयास करते रहे हैं। हमें मानवता का हितग्राही उन सभी बिन्दुओं का संकलन करना होगा।

सतनामियों का गौरवशाली इतिहास ः

यह भी एक ऐतिहासिक सत्य है कि सन्त कबीर की अगुआई में रूढ़िवाद, अन्धविश्वास और कर्मकाण्ड के विरूद्ध चला सतनाम व सतनामी आन्दोलन शदियों से जुल्म ज्यादती व अन्याय अत्याचार के विरूद्ध संघर्ष रत रहा है चाहे **1672** में औरंगजेब द्वारा जजिया लगाये जाने के खिलाफ उदयसिंह उर्फ उदादास के नेतृत्व व संत बीरभान व जोगीदास की अगुआई में सतनामी विद्रोह हो या फिर छत्तीसगढ़ में गुरू घासदिास द्वारा सूबेदारी प्रथा व पिंडारियों द्वारा लूटपाट का विरोध हो, सतनामियों ने हमेशा सिर उठाकर जीना सीखा है।

इतिहास साक्षी है कि औरंगजेब के साथ युद्ध करते नारनौल से मथुरा तक **5000** से ज्यादा सतनामी शहीद हुए थे आज भी साध सतनामी होली के बदले उन शहीदों की याद में फाल्गुन शुक्ल पक्ष चौदस से चैत्र कृष्ण

पक्ष द्वितीय, चार दिन तक भण्डारा के साथ सतनाम का जाप करते वीर शहीदों को श्रद्धा सुमन अर्पित करते है। प्रत्येक पूरनमासी को भी भण्डारा होता है। महाकोशल की राजधानी सिरपुर बौद्धकालीन ज्ञान केन्द, गौरवशाली हैहैय वंशी काल, बलिदानी राजा गुरू बालकदास, शहीद बीरनारायणसिंह, शहीद गेंदसिंह मारिया विद्रोह, मा. नैनदास व नकुल ढिढ़ी आदि इस बात का सबूत है कि यहॉ के वीर सपूतों ने हमेशा अन्याय – अत्याचार के विरूद्ध संघर्षरत समाज को हमेशा गौरवान्वित करते रहे है। अतः हमें घृणा के बदले अपने बुजुर्गो के बताये रास्ते भाईचारा में चलकर प्रेम व आदर का संदेश जन जन को देना होगा ताकि सबको समाहित कर भारत भूमि को सतनाममय बनाया जा सके।

हमे अपना इतिहास स्वयं लिखना होगा ः

आपको यह जानकर आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि आज सतनाम साहित्य के श्रृजन में पूर्वाग्रह से ग्रस्त हाथों के कलम का कमाल नजर आता है जो अपने प्रादूषित विचारधारा से ऊपर नहीं उठ पाये और निर्मल सतनाम संस्कृति को जातिवादी कलम से पोतने का प्रयास किया गया है। एक तरफ तथ्यों को तोड़ मरोड़ कर पेश करने का भरपूर कोशिश नजर आता है तो दूसरी ओर संत महापुरूषों के विचारधारा व आंदोलन को उल्टी दिशा में मोड़ने का कयास भी स्पष्ट नजर आता है। यह जानते हुए कि मजहब और सांप्रदायिकता से ऊपर, सतनाम संस्कृति किसी भी तरह का विभेद को जड़ से नष्ट करते हुए समता, स्वतंत्रता, बंधुत्व और न्याय के साथ मानवीय मूल्यों को हमेशा ऊपर उठाने में कटिबद्ध है।

सतनाम संस्कृति कर्म—काण्ड के बदले कर्तव्य बोध का पाठ पढ़ाती है ताकि प्रेम और भाईचारा की धारा, इस पावन धरा पर अविरल गति से प्रवाहित होता रहे और मानव समाज सहज रूप से तनाव मुक्त, शोषण रहित, सरल जीवन यापन कर सके। “हम वासी उस देश के जहॉ जाति वरन कुल नाही, शबद मिलावा होयगा देह मिलावा नाहीं।” अतः हमारा सतनाम साहित्य का प्रथम प्रयास भ्रम विनाश की दिशा में होना चाहिए ताकि भय मुक्त समाज की स्थापना हो सके। हमे आस्थावान से ज्यादा श्रद्धावान साहित्य का सृजन करना होगा जिसमें भावना के बदले तर्क पूर्ण जीवन सिद्धान्त को अधिक महत्व मिले जो हमारे संत महापुरूषों व गुरूओं के वाणी से प्रतीत होता है। आज समय की आवश्यकता है कि सन्त गुरूओं के जीवन दर्शन के साथ वाणियों का विस्तार, सापेक्ष व निरपेक्ष या श्रोता व भोक्ताभाव सभी पहलुओं को ध्यान में रख कर किया जाना चाहिए जो कल्पना से ज्यादा व्यवहारिकता की ओर समाज को मोड़ता हो।

ऐसे तो सतपथी होना कठिन काम है वह भी जब हम झूठे चमत्कार के पायदान पर बैठे होते हैं अतः यदि हम मानव समाज का कल्याण चाहते हैं तो काल्पनिक जगत के बदले हमें व्यवहारिक दुनिया में निवास

करना होगा, शोषण मुक्त मानव हितकारी समाज व्यवस्था का निर्माण करना होगा। हमें इसी धरती को ही स्वर्गतुल्य बनाना होगा। हमें शोषण के विभिन्न तरीकों का बरीकि से अध्ययन करना होगा ताकि उसे जड़ से समूल नष्ट किया जा सके। हमारे विचार, सिद्धान्त व नीति- नियम सहज और सरल होना चाहिए ताकि साधारण से साधारण आदमी उसे आसानी से ग्रहण कर निर्वाह कर सके। समाज को हर दिशा में आत्मनिर्भर बनाना होगा ताकि वे अपनी गाढ़ी कमाई की सूखी रोटी में अपना अमन चैन ढूढ़ सके।

हम जानते हैं कि गुलामों का कोई साहित्य नहीं होता।आज इन सारी तथाकथित इतिहास को भी जानने की जरूरत है। आज हमें अपनी लेखनी का इस्तेमाल करते हुये समाज द्वारा संपादित कार्यक्रमों का लिपी बद्ध करना भी जरूरी है, ताकि अगली पीढ़ी को सीख व सबक मिलता रहे। आज हमें सभी संत गुरूओं के जीवन दर्शन के साथ गुरू पर्व **18** दिसम्बर व गुरू बालकदास जी के बलिदान दिवस **28** मार्च को भी रेखांकित करने की जरूरत है ताकि समाज में नव चेतना प्रवाहित हो सके।

दुनिया में सतधर्म ही मानव का मूल धर्म है शेष सभी मजहब ः

आइये आज हम सत को सहज व सरल तरीके से परिभाषित करने की प्रयास करें। "सत्य आभूषण जानिये सत जीवन व्यवहार, प्रेम दया करूणा क्षमा विनय शील सत सार।" सतधर्म ही मानव का केवल एक मात्र धर्म है शेष मजहब व संप्रदाय है जो केवल अपना और अपने स्वार्थ तक सीमित है। सतधर्म बिना किसी विभेद के सभी जीवधारी प्राणियों पर बराबर लागू होता है और उसके व्यवहार से मन में शांति उत्पन्न होती है। हर व्यक्ति जन्म से सतनामी ही है क्योंकि वह प्रेम, दया करूणा की भावना से ओत प्रोत होता है केवल संसर्ग के कारण विकार उत्पन्न होते हैं और बाद में सांप्रदायिक ताकतों के इशारे पर वे मजहबी बन जाते हैं। वहीं घृणा व विद्वेष के साथ जाति- पाति व सांप्रदायिकता की जहर मनुष्य को ईष्यालु, गुस्सैल, विषैला व खतरनाक हिंसक प्राणी बना देता है। यही, वह असत मार्ग है जो अपने -पराये की पाठ पढ़ाकर विभेद पैदा करती है, अधर्म है। अतः प्रेम व भाईचारा के साथ, सतनाम का अमृत पिलाकर, मानवता का संदेश जन जन तक पहुॅचाये ताकि यह धरती खुशहाल व प्रगतिशील हो सके।

विचारधारा ही परिवर्तन की दिशा तय करती है।आज भी मूलतः यहॉ के बहुसंख्यक मूलनिवासियों का विचारधारा एक ही है चाहे वे संत कबीर, गुरू घासीदास, गुरू नानक, गहिरा गुरू या बुढ़ादेव का कोयपुनेम, सब सतनाम के मानने वाले है। दुनिया में सतनाम केवल एक और एक ही है।सतनाम अपने आप में एक क्रान्तिकारी शब्द है इसे हमें समझना होगा। जहॉ -जहॉ सतनाम का पदार्पण हुआ वहॉ वहॉ क्रान्ति का बिगुल बजा है। सतनाम में वह शक्ति है जो धरती पर रहते हुए परलोक का सपना देखने वालों को जमीन

की सच्चाई पर खींच लाती है। इस लोक में रहते हुए सत्य मार्ग पर चलना अपने आप में एक चमत्कार है। अतः आप कितना आगे बढ़े है वह उतना महत्व नहीं, महत्व इस बात का है कि आप किस दिशा में आगे बढ़े है।

वैचारिक मतभेद का अन्त करना भी सतनाम साहित्य का मकसद होना चाहिए

आप सभी जानते है कि छोटी छोटी बातों में अकसर वैचारिक मतभेद हुआ करते है। महामानव बुद्ध के प्रचारक भिक्षु संघ हीनयान और महायान में विभक्त हो गये थे। महाबीर जैन के अनुयायी श्वेतांबर और दिगम्बर में बंट गये। ईशा मसीह के मानने वाले कैथलिक और प्रोटेस्टेंट के नाम से जाने जाते हैं। मोहम्मद पैगम्बर के मानने वाले शिया और सुन्नी में विभाजित हैं। वैदिक लोग भी शैव- साक्त से लेकर न जाने कितने भागों में बंटे हैं, कोई श्वेत पूजा करता है तो किसी का हाथ रक्त रंजित रहता है। सभी अपनी विचारधारा को सर्वोत्तम बताने में होड़ लगा रहे है। आपस में छोटे छोटे मजहब व संप्रदाय में बंटे एक दूसरे को मरने मारने में उतारू रहते है। लेकिन दुनिया में सत मार्ग और सतनाम केवल एक और एक ही है सभी अंततः इसी दिशा में मुड़ते नजर आते है।

जाति और मजहब से ऊपर उठकर संत महापुरूषों की श्रद्धा व आदर करना हमारी परंपरा रही है। यही कारण है कि समय- समय पर महामानव बुद्ध से लेकर संत कबीर, गुरू घासीदास व गुरू बालकदास सबने इस पावन भूमि पर प्रेम व भाईचारा के साथ सतधर्म का संदेश देते हुए सतनाम संस्कृति का बीजारोपण कर नव चेतना पैदा करने का प्रयास करते आये है। करमा माता व गहिरा गुरू के सत संदेश व सतपथी कोयापुनेम इसी धरती पर पल्लवित हुआ है जिसे आज भी यहॅा के मूलनिवासी बड़े श्रद्धा के साथ अनुशरण करते हैं। आज ये सब के सब हमारे श्रद्धा के पात्र है।

सतनाम संस्कृति को कला और साहित्य का संगम बनाना होगाः

यह भी सर्व विदित है कि भारत की प्राचीनतम नाग- द्रविड़ सभ्यता कला और संस्कृति में उत्तम रहा है लेकिन शिल्प कला के साथ कृषि में प्रवीण खासकर छत्तीसगढ़ के मूल निवासी आदिकाल से द्रविड़ संस्कृति में महारथ, प्रकृति के पूजारी रहे हैं। रूढ़िवाद व अंधविश्वास से कोसों दूर यहॅा के मुख्य पर्व एक तरफ प्रकृति के बिल्कुल करीब, कृषि और फसल से ही संबंधित हरेली, भोजली, तीजा, पोला, नवाखवाई, विजयदशमी मे गढ़ तोड़ने की परंपरा, जेठौनी, छेरछेरा आदि है। वहीं स्त्री- पुरूष की सहभागिता के साथ सुआ, गेंड़ी, गौरा, करमा, पंथी, राउतनाचा, डंडा, शैला आदि मनोरंजन व कला के क्षेत्र में अग्रणी रहा है। यहॅा की मूल संस्कृति प्रेम व भाईचारा पर आधारित रहा है। समयोपरांत कुछ स्वार्थी व सांप्रदायिक ताकतों

ने यहॅा के सौहाद्रपूर्ण वातावरण को दूषित कर नस्ल, रंग व वर्ण भेद से भी खतरनाक जाति भेद का जहर घोल दिया। अशिक्षा के कारण लोग जाति और उपजाति में बंटे गुलामी का जीवन जीने को मजबूर है। यह जातिवाद का परिणाम है कि यहॅा समस्त बहुसंख्यक पिछड़ी जातियॅा, आपसी मतभेद के कारण चन्द पूंजीपति व शोषकों के गुलाम हैं। प्रेम -भाईचारा के साथ सखी- मितान महाप्रसाद का गढ़, आज करम— काण्ड के आड़ में रूढ़िवाद और अन्धविश्वास से जकड़े जातिवाद का गढ़ नजर आता है। रूढ़िवाद के साये में दिन प्रतिदिन लोग अपनी मूल प्राकृतिक संस्कृति को भूलते जा रहे है।

यह कैसी बिडंबना है कि देवी- देवताओं के भगदड़ के बीच, यहॅा लोग दुखी व भूखे- नंगे सोने में मजबूर हैं। शिक्षा का स्तर निम्न से निम्नतम होता जा रहा है आठवीं कक्षा के छात्र ठीक से मात्रा को भी नहीं जान पा रहे हैं भला वे प्रतिश्पर्धा के दौर में कहॅा टिक पायेंगे। पलायन लगातार जारी है, लोगों के पास पेट भरने को दाना नहीं, पर शोषक वर्ग भोले -भाले आम आदमी को धरम- करम के बहाने, कर्मकाण्ड के चक्कर में उलझाकर, चारों धाम की यात्रा की वाहवाही जरूर ले रहे है, साथ ही सत्ता के गलियारे में ठगी -व्यापार व लूट- पाट का धंधा भी आराम से चला रहे हैं। जनता को जगाने के लिए साहित्य और कला के माध्यम से इन सबका चित्रण जरूरी है।

हम अपनी साहित्य व कला के अभाव में बाजार की सड़ी गली परंपराओं से गुजारा करते है जिससे समाज प्रादूषित हो रहा है। यदि मानसिक प्रादूषण से बचना है तो उचित साहित्य का निर्माण करना होगा तथा हमे बार- बार मिलते जुलते रहना होगा, ताकि प्रकृति के अनुरूप हम अपना प्राचीन सतनाम संस्कृति को सुदृढ़ बना सके। संगठित समाज के लिए हमें वैचारिक एकरूपता स्थापित करना होगा ताकि हम अपना हक और हुकुमत हासिल कर सकें। हम सत्ता में निर्णायक भूमिका अदा कर सकते है। साथियों सोचिये ... ।

मान और सम्मान हासिल करना जरूरी हैः

प्रजातंत्र के **62** साल बाद भी वर्तमान खड़ी विषमतावादी समाज व्यवस्था के कारण मानवीय मुल्यों के साथ कुठाराघात हो रहा है। एक व्यक्ति का एक वोट है और एक वोट का एक मूल्य है लेकिन सीढ़ीनुमा समाज व्यवस्था के कारण एक व्यक्ति का एक मूल्य नहीं है। कुर्मी समाज में पैदा हुए छत्रपति साहू जी महाराज ने कहा है – “*भारत में विधाता की भी जाति होती है। समस्या का जड़ जाति है इसलिए हर समस्या का हल जाति से प्रारंभ होता है। जब तक जातियॅा रहेंगी देश दरिद्र, बुद्धिहीन और गुलाम रहेगा। भारत की उन्नति जल्दी या देर से होगी यह जाति भेद के नष्ट होने पर निर्भर करता है। ब्राह्मणों का जन्म सिद्ध अधिकार समाप्त होना चाहिए। मैं अपना स्पष्ट विचार रखता हॅू मुझे कुछ डर नहीं।*” यहॅा की समाज

व्यवस्था 6000 जातियों में बंटा हुआ है। कुछ लोग वर्ण और जाति दोनों के आधार ऊपर बैठे सम्मानित होते हैं तो कुछ लोग सबसे नीचे दबे अपमानित होते हैं। जो नीचे बैठा है वह ऊपर वालों की बोझ से दबा जा रहा है, जो बीच में है वे पीसे जा रहे है। चालक लोगों ने अपनी वर्ण और जाति दोनों को एक रखा है ताकि वे संगठित रहें। वास्तव में जातियॉ केवल शूद्रों के लिए है ताकि ये हमेशा विभाजित, आपस में लड़ते कमजोर रहें। इस व्यवस्था में ऊपर से नीचे की ओर अपमानित होते जाते है और वहीं नीचे से ऊपर की ओर मान- सम्मान बढ़ते जाता है। अतः जिनको इस व्यवस्था से लाभ हो रहा है ऐसे लाभदायी वर्ग यथास्थिति बनाये रखना चाहते हैं वे इसे बदलना नहीं चाहेंगे और न ही वे बदलने की कभी बात करेंगे। लेकिन जिनको हानि हो रहा है वे कब तक चुप बैठेंगे।

हमारे गुरूओं ने सतनाम आन्दोलन चलाकर इस जातिवादी व्यवस्था को जड़ से समाप्त करने की कोशिश की। भारत के अन्य प्रांतों में सतनामी कोई जाति नहीं है यह विशुद्ध विचारधारा है लेकिन छत्तीसगढ़ में यह एक जाति विशेष में सिमट कर रह गया है। यह कैसी विडम्बना है कि संत कबीर, गुरूनानक संत बीरभान, संत जगजीवनदास व गुरू घासीदास के सतनाम आन्दोलन जो प्रेम और भाईचारा का संदेश देता है ऐसे उत्तम विचारधारा के लोगों को हेय दृष्टि से देखा जाता है। सत की बात करने पर घृणा किया जाता है वहीं असत की पूजा होती है। घृणा और विद्वेष फैलाने वाले लोग स्वयं को उच्चवर्ग कहने में शर्मिंदगी भी महशूस नहीं करते। वे घृणा दें और हम प्रेम दें। साहित्य के माध्यम से हमें आपसी विभेद को समाप्त कर प्रेम और भाईचारा के साथ समता और सम्मान के लिए विषमतावादी व्यवस्था के खिलाफ एक जुट होकर संघर्ष का सूत्रपात करना होगा ताकि हम अपना मानवीय अधिकार मान और सम्मान के साथ अपना हक और हुकुमत वापस ले सकें। अतः सतनाम के मानने वाले एक हों।

हक और हुकुमत के लिए संघर्ष जरूरी ः

जिस तरह का अधिकार चाहिए उसी तरह का संघर्ष करना होगा। हक और हुकुमत के लिए संघर्ष जरूरी है। साहित्य सांघर्ष का पथ प्रदर्शक बन सकता है। गुरू घासीदास जी द्वारा सन् 1820 से 1830 तक सतनाम आन्दोलन के तहत चलाये। उनके ***बौद्धिक क्रान्ति*** (Intelectual War) का ही परिणाम है कि सन् 1825 में पहली बार अंग्रेज शासकों द्वारा शिक्षा का द्वार सभी वर्गो के लिये खोला गया। पिण्डारी प्रथा से समाज को मुक्त कर 700 से ज्यादा गांव के जमीनदार रहे। सूबेदारी प्रथा को समाप्त कर गुरू बालकादास जी को राजा गुरू की पदवी से नवाजा गया और छत्तीसगढ़ के गांव गांव में सभी समुदाय के लोग सतनाम आन्दोलन में शामिल हुए। समाज को संगठित करने के लिए *आदरणीय नकुल ढीढ़ी* **जी** पहली

बार *18 दिसम्बर सन् 1938* को अपने ग्राम भोरिंग (महासमुंद) में गुरू घासीदास जयंती का शुरूवात किये। उन्होंने *सन् 1961* **में** फागुन शुक्ल पंचमी, छठमीं सप्तमी को तीन दिवसीय **गिरौदपुरी मेला** का शुरूवात कर समाज को एक सूत्र में पिरोया है। इनके अलावा अन्य गुरूओं, राजमहंतों, सामाजिक कार्यकर्ताओं ने विभिन्न संगठनों के माध्यम से अपने अपने तरीको से प्रयास किये हैं, वे सभी धन्यवाद के पात्र हैं, भुलाया नहीं जा सकता। संत, ग्रंथ व पंथ के निर्माण में साहित्य के माध्यम से समाज को संगठित करना समय की आवश्यकता है जिसके लिए त्याग व बलिदान की आवश्यकता है। त्याग की भावना पैदा करने के लिये, **गुरू बालकदास जी के बलिदान** को जन जन तक प्रचारित व प्रसारित करना अत्यंत जरूरी है। सतनाम के पुरोधा, सरहा और जोधाई की बीरता जो जंगे मैदान में गुरू बालकदास के साथ शहीद हो गये उन्हें कोटि कोटि नमन! *कर्नल इग्नू के शब्दों में ः-* अगर गुरू बालकदास जी **10-15** साल और जिंदा होते तो संपूर्ण छत्तीसगढ़ सतनाम–मय होता। हमें उनका अधूरा सपना को पूरा करने के लिए पूरे छत्तीसगढ़ व भारतभूमि को सतनाम–मय बनाना है ताकि हर बच्चा– बच्चा प्रेम और भाईचारा के साथ शोषण रहित समाज व्यवस्था के निर्माण में भागेदारी बन सके।

भविष्य की चुनौती के लिए नवयुवक वर्ग हमेशा तैयार रहें ः

सत– पथ पर चलने वालों को विषमतावादी *सांप्रदायिक ताकतों* से सदैव चुनौती मिलता रहेगा और हमें इसके लिए हर पल तैयार रहना होगा। गुरू बालकदास जी की बलिदान सबसे बड़ी चुनौती का उदाहरण हमारे सामने है। वे रावटी लगाते तत्कालीन ब्याप्त *विषमतावदी समाज व्यवस्था, अन्याय– अत्याचार* आदि के खिलाफ *समता, सम्मान एवं भागीदारी के साथ, प्रेम और भाइचारा* का संदेश देते हुए गांव –गांव में सतनाम आंदोलन चलाये। फलस्वरूप पूरा गांव के गांव की जनता, सारे भेदभाव को त्यागकर, सतनाम आन्दोलन में शामिल होने लगे। इस आन्दोलन से जातिवादी व्यवस्था चरमराने लगी और शोषक वर्ग व सामंती ताकतों में खलभली मच गयी। लेकिन सतनाम के पुरोधा निर्भिक तनिक भी नहीं झुके बल्कि जनेऊ और तलवार धारण कर तत्कालिन रूढ़ीवादी खड़ी व्यवस्था पर कठोर प्रहार किया। सती प्रथा के विरोध में नारियो को सम्मान और बराबरी का हक दिलाने हेतु जन चेतना अभियान चलाये फल्स्वरूप अंग्रेजों द्वारा सन् **1829** में सती प्रथा को प्रबिंधित करना पड़ा और गुरू बालकदास जी को **राजा गुरू** की पदवी से नवाजा गया। सतनाम आन्दोलन अपने पटरी पर तेज गति से चलने लगा, वहीं रोक पाने में असफल सामंती शोषक सवर्णो द्वारा गुरू बालकदास की हत्या का षडयंत्र होने लगा और **28** मार्च **1860** में गुरू बालकदास की औराबांधा में निर्ममतापूर्वक हत्या कर दिये। सतनाम के पुरोधा सतनाम आन्दोलन में अपने अंगरक्षक

सरहा और जोधाई के साथ शहीद हो गये। आप सबको शत शत प्रणाम ! इससे संपूर्ण मानव समाज को सबक लेने की जरूरत है।

सामाजिक लहर व वैचारिक एकरूपता के लिए प्रशिक्षण जरूरी है। हमे अपनी ताकत को पहचानना होगा और विघटनकारी, कट्टरपंथी, सांप्रदायिक ताकतों को जड़ से उखाड़ फेंकने के लिए संकल्प लेना होगा। बिकाऊ समाज के बदले टिकाऊ समाज बनाना होगा। हमें केवल वैचारिक एकता स्थापित करना होगा समाज अपने आप संगठित हो जायेगा। हमें गुरू बालकदास का सपना साकार करने का संकल्प लेना होगा।

अतः हमारा उद्देश्य ः

हम एक ऐसे सतनाम पन्थ का पुनर्निर्माण करेंगे, जो हमारे **'मान सम्मान की रक्षा'** के साथ 'हमारे पर-निर्भरता का अन्त' करते हुए उचित नेतृत्व के साथ **'मानवीय मूल्यों'** में निरन्तर बृद्धि करते हुए **'सर्वांगिण विकास'** की ओर उन्मुख हो।ताकि **आत्म-सम्मान** की रक्षा के साथ संपूर्ण छत्तीसगढ़ व भारत देश का सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक विकास सम्पन्न हो सके और सर्वांगिण विकास की दिशा तय हो सके। संत, ग्रंथ और पन्थ के निर्माण में हमारा उद्देश्य सर्वोपरि होना चाहिए।

हमे गुरूओं के इन अमरवाणियों का विस्तार करना होगा ः

1. मरे के बाद पीतर मनाय हर मोला बैहा कस लागथे।
2. तैंहर अपनेच भाई ल खावे।
3. तोर पीरा हर ओतकेच अकन आय, जतका मोर आय। कोनो जीव ला झन मारबे।
4. तोर दाई दाईच ये, त मोरो दाई दाईच ये। दाइ हर दाइ आय।
5. मुरही गाय के दुध ला झन पीबे।अऊ भैंस ला नागर झन जोतबे।
6. एक धूबा मारे तेनो, तोर बराबर आय।अर्थात एक गर्भ (का बच्चा) शिशु भी तुम्हारे समान है।
7. दान के लेवैया पापी, दान के देवैया पापी।
8. भगवान के नाम पर पान, परसाद, नरियर, सुपारी चढ़ावन हा ढोंग आय।
9. मोर हा तो संत के (तोर) आय, तोर हा मोर बर किरा आय।
10. करिया हो के गोरिया हो, ये पार के हो के ओ पार के हो, मनखे हर मनखे आय।
 'सबो मनखे एक बराबर हैं।'
11. तोर ला संत खाही, संत के ला तैहर खावे, नहीं तो सतनाम ला छोड़ देबे।
12. तोर भगवान हर भगवान नोहय, मोर भगवान हर भगवान(अपन घट) आय,

तोर भगवान एक बहेलिया आय।

13. गिआन के पंथ, किरपान के धारा अर्थात ज्ञान मार्ग दोधारी तलवार है।
14. पढ़ ले , सुन ले, मूंदे केला मूंद ले, जेहर नई मुंदावय तेन ला कहिबे झन।
15. अवईया ला रोकौं नहीं जवईया टोकौं नहीं।
16. मोला देख, तोला देख, बेरा देख कुबेरा देख, जौन कछु हावय, तौन ला बॉट बिराट के खा लेव।
17. सबो सन्त एक बरोबर। जे ज्ञान दीही ते ज्ञानी जे निन्दा करही ते अभिमानी।
18. मोर सन्त मन मोला काकरो ले बड़े झन कइहा। नई तो मोला हुदेसना मा हुदसे कस लागही।
19. मन्दिर मस्जिद बनई हर मोर मन नी आय । तोला बनाए बर हे त तरिया बना, दरिया बना, कुआ बना, धरमशाला बना, अनाथघर बना, दुर्गम ला सरल बना।

चर्चा के मुख्य बिन्दु ः इन विषयों पर कृपया अपना लेख व विचार अवश्य प्रस्तुत करें

1. सतनाम क्या है ? सतनाम और भौतिक जगत
2. भारत में सतनाम अंदोलन की शुरूआत कब और कैसे?
3. सन्त गुरूओं का जगह जगह सतनाम आन्दोलन स्वरूप व प्रभाव
4. सतनाम कला और साहित्य का समन्वय जरूरी क्यों ?
5. भ्रम विनाश जरूरी क्यों ?
6. सतनाम संस्कृति उत्तम जीवनशैली
7. धर्म मजहब व संप्रदाय क्या है ?
8. धर्म व अधर्म क्या है?
9. सतनाम धर्म या सतधर्म क्या है?
10. आओ इस धरती को स्वर्ग बनायें
11. सतनाम संतों के उपदेश व कार्य
12. चित से चेतना व बौद्धिक चेतना तक
13. सतनाम आन्दोलन और गतिशीलता का सिद्धान्त
14. सन्त ग्रन्थ और पन्थ के साथ सतनाम सतसंग की प्रासंगिकता

कार्यक्रम को सफल बनाने में सभी सामाजिक शुभचिंतकों का सहयोग प्रार्थनीय है।

साभार समर्पित

टी आर खुंटे

चेयरमेन स्वागत ट्रस्ट

प्रेस विज्ञप्ति   दिनॉक— **16 07 2013**

गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर **6** में **493** वें गुरू वंदना के अवसर पर "टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम संपन्न"

TIPS Of THE FIELD PROGRAMME HELD

गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर **6** भिलाई में **15** जुलाई **493** वें गुरू वंदना के अवसर पर श्री विशाल दास बंधे जी , सेवा निवृत वरिष्ठ कार्यालय अधीक्षक ने " भ्रम से जुड़ी अवसर एवं चुनौतियॉं " विषय पर अपने अनुभव के टिप्स प्रदान किये ।उन्होंने बताया कि "जीवन भ्रम का जाल है " इसे कोई भी नकार नहीं सकता ।पग पग पर छोटे से बड़े भ्रम का सामना करना होता है ।इतना तो जरूर है कि किसी भी क्षेत्र में जानकारियों का अभाव ही भ्रम को जन्म देता है ।भ्रम से आमतौर पर आपसी संबंध खराब तो होता ही है , छोटी से बड़ी दुर्घटनाओं का कारण भी बनता है ।पति-पत्नी के बीच भरम-भूत बड़ी ही प्रचलित शब्द है । इस भरम-भूत के चक्कर ने न जाने कितने ही पति-पत्नी के आपसी जीवन को तबाह कर दिया है ! आज भी तबाही रूकते नजर नहीं आ रहा है , इसका रूप जरूर बदलते आ रहा है।भरम-भूत का चक्कर सर्व व्याप्त है।जाति-धरम, अमीर-गरीब, शिक्षित-अशिक्षित सभी में पति-पत्नी के बीच किसी न किसी मात्रा में भरम-भूत का छाया अवश्य देखने को मिलता है ।भ्रम व भय का चोली दामन का रिस्ता होता है ।जहॉं जहॉं भी भ्रम होगा , भय का छाया भी अवश्य मिलेगा ।इस तरह भ्रम की स्थिति बेहद खतरनाक होती है ।

अज्ञान व अंजान भ्रम का समानुपाती होता है ।इतिहास बताता है कि भारत देश में बहुसंख्यक वर्ग को सदियों से अज्ञान व अंजान रख कर , उनको भ्रम की स्थिति में जीने पर मजबूर किया गया था ।इस तरह कुछ चालाक लोगों ने भ्रम के जरिये अपने लिये अवसर की व्यवस्था किये थे ।सदियों तक इस अवसर का लाभ उठाते रहे हैं ।निः संदेह आज भी ऐसे चालाक लोगों के पास बेहतर अवसर है ।भ्रम के शिकार लोगों के पास सदियों से चुनौतियॉं ही चुनौतियॉं रही है ।मानवतावादी संतों व महात्माओं ने इस चुनौतियों को स्वीकार किया ।भ्रम के शिकार लोगों को आपस में जोड़ने का , उनमें चेतना पैदा करने का प्रयास किया गया ।भ्रम के शिकार लोग दयनीय स्थिति को अपने भाग्य समझ कर ही लंबे समय तक सहते रहे ।सन् **1825** में शिक्षा का सेक्यूलर होना भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण घटना है । इसका क्षेय तत्कालीय मानवतावादी संतों व महात्माओं को जाता है ।शिक्षा के क्षेत्र में इस पहली कदम से ही भ्रम का टूटना भी प्रारंभ हुआ ।सन् **1919** का प्रथम भारत अधिनियम , सन् **1935** का द्वितीय भारत अधिनियम के

बाद भारत का आजाद होना व **26** जनवरी **1950** को देश का अपना संविधान का लागू होना ।सभी भारतीय नागरिकों को मूलभूत अधिकार , जिसमें सर्व शिक्षा को प्राथमिकता प्रदान करना , निश्चित रूप से सदियों से हर तरह के साधन से वंचित लोंगों के लिये अवसरों की सौगात मिलना शुरू हुआ ।संविधान के लागू होने से पिछले वर्षो में सदियों से अभागे समाज को काफी कुछ हासील हुआ है ।हालाकि आज भी देश में आर्थिक व सामाजिक गैर बराबरी को दूर करने की चुनौती को ध्यान में रखना होगा , जो हमारे देश के संविधान बनाने वालों की देश हित में प्रमुख सलाह रही है ।

सदियों से हर प्रकार के साधन से वंचित लोगों को भ्रम से पहले भी काफी कुछ नुकसान हो चुका है ।कोशिष करें कि भ्रम की स्थिति ही पैदा न हों ।वर्तमान परिवेश में विकासशील व अविकसित समाज के पढ़ा लिखा वर्ग का विशेष दायित्व हो जाता है कि समाज में किसी भी प्रकार के भ्रम को रोकें । पढ़ा लिखा वर्ग की ओर समाज का ध्यान केन्द्रित होता है । पढ़ा लिखा वर्ग , विशेष कर जो सामाजिक गति विधियों से निरंतर जुड़ा होता है , इनका हर प्रकार की गतिविधियों का समाज पर प्रभाव निश्चित रूप से पड़ता है ।ऐसे लोगों को अपनी कदम फूंक फूंक कर रखना होगा , कहीं इनके किसी कदम से समाज में भ्रम की स्थिति पैदा न हों ।भ्रम की स्थिति पैदा होने से अविश्वास की भावना पैदा होना स्वाभाविक है ।अविश्वास को दूर करना टेढ़ी खीर हो जाती है ।भ्रम से उपजी चुनौतियों को दूर करना हम सबकी जिम्मेदारी बन जाती है ।इतना तो जरूर है कि सीधी वार्तालाप से भ्रम की स्थिति में कमी आती है , अतएव भ्रम को दूर करने के लिये इस कारगार तकनीक का अवश्य उपयोग करें ।

इस अवसर पर श्री विशाल दास वंधे जी का स्वागत श्री मोहन लाल भतरिया जी ने चंदन का टीका लगा कर किया । गुरू प्रसाद श्री आर सी देशलहरा जी के परिवार की ओर से आयोजित की गई। इसी कड़ी में '' अगला टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम '' गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर **6** भिलाई मे **494** वीं गुरू वंदना के अवसर पर दिनॉक **22** जुलाई **2013** शाम **6. 30** बजे संपन्न होगा , जिसमें समस्त आम जन आमंत्रित हैं ।

(एफ आर जनार्दन)

ब्यूरों चिफ संयोजक

प्रेस विज्ञप्ति दिनॉक– **09 07 2013**

गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर **6** में **492** वें गुरू वंदना के अवसर पर

"टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम संपन्न" TIPS Of THE FIELD PROGRAMME HELD

गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 भिलाई में 1 जुलाई 492 वें गुरू वंदना के अवसर पर कु तोशिबा चंदवानी , स्कूली छात्रा ने " समय के पालन से जुड़ी भावनायें " विषय पर अपने अनुभव के टिप्स प्रदान किये ।उन्होंने बताया कि "समय अनमोल है" इसे कोई भी नकार नहीं सकता ।हर किसी का जीवन , जनम् व मरन् के बीच होता है , जो खुद के अधीन नहीं होता ।इसीलिये समय का महत्व को हर चिंतनशील व्यक्ति समझ सकता है ।अनजाने व चिंतन के अभाव में व्यक्ति समय का सदुपयोग न कर दुरूपयोग कर डालता है ।समय आने पर अपनी गलती का एहसास जरूर होता है ।इसीलिये "रिबफ एंड रिफार्म " (धक्का खाने के बाद अपने आप में परिवर्तन आना) प्रत्येक के जिंदगी का अंग होता है ।समय का पालन प्रत्येक मानव के लिये किसी न किसी रूप में भावनात्मक पहलू है ।व्यक्तिगत जीवन के अलावा अन्य क्षेत्रों चाहे सामाजिक हो , राजनीतिक हो ,अर्थ संबंधी हो , सरकारी अथवा प्राइवेट कोई भी योजना हो समय अवधि को ध्यान में रख कर अनेक माइल स्टोन निर्धारित कर लक्ष्य प्राप्ति की ओर बढ़ा जाता है ।ये अलग बात है कि उपलब्ध साधन , कमजोरियों , प्राप्त अवसर के साथ ही संभावित चुनौतियों का भी माईल स्टोन व लक्ष्य निर्धारण में अहम भूमिका होती हैं ।अक्सर लोग अपनी कमजोरियों व संभावित चुनौतियों का अनुमान नहीं लगा पाते और बाद में धोखा खा जाते हैं ।लक्ष्य की प्राप्ति नहीं होने पर निराशा हाथ लगती है ।बार बार लक्ष्य की प्राप्ति नहीं होने से आत्म विश्वास टूट जाता है और जिंदगी से निराश हो जाता है ।पुनः विश्वास जुटाना कठिन सा हो जाता है ।

वर्तमान में ग्राहक संतुष्ठि (Customer Satisfaction) का विशेष ध्यान हर जगह रखा जाता है ,चाहे वह सरकारी प्रतिष्ठान हो अथवा गैर सरकारी प्रतिष्ठान ही क्यों न हो ।आज शायद ही कोई क्षेत्र है , जहाँ किसी का एक मात्र एकाधिकार हो ।हर क्षेत्र में स्पर्धा व्याप्त है ।ऐसे में ग्राहक संतुष्ठि(Customer Satisfaction) का महत्व आगे भी कम नहीं होगा ।गुणात्मक सामाग्री अथवा सेवा के साथ ही डिलेव्हरी समय अवधि का विशेष महत्व होता है ।देखा गया है कि ग्राहक व्यक्तिगत रूप से सेवा प्रदान कर्ता के द्वारा निधारित डिलेव्हरी समय निर्धारण व कार्यानवयन का बहुत असर पड़ता है ।डिलेव्हरी समान प्राप्ति के लिये व्यक्ति का भावनात्मक लगाव होता है ।निधारित समय पर डिलेव्हरी होने से ग्राहक का सेवा प्रदान करने वाले के प्रति लगाव बढ़ जाता है और भविष्य में भी ग्राहक तो बना ही रहेगा अपितु दूसरों को भी ग्राहक बनने के लिये प्रेरित निश्चित रूप से करेगा । ठीक इसके विपरीत अगर निधारित समय में सेवा नहीं मिलने से ,

भगनात्मक लगाव होने से सर्विस प्रदान करने के प्रति अलगाव पैदा होने लगता है।सामाग्री अथवा सेवा में सब –स्टेण्डर्ड व डिलेव्हरी में बार बार वादाखिलाफी को कोई भी ग्राहक बर्दास्त नहीं कर पाता ।

देखा जाय तो प्रत्येक व्यक्ति परोक्ष अथवा अपरोक्ष रूप से समयानुसार ब्यापारी व ग्राहक दोनों की ही भूमिका अदा करता है ।प्रत्येक ब्यक्ति को ब्यापारी की उत्तरदायित्व तथा ग्राहक की जरूरत व चाहत से जुड़ी भावनाओं को समझने की जरूरत है ।सफल ब्यापारी (चाहे किसी भी क्षेत्र में हो) , वही हो सकता है जो ग्राहक की जरूरत व चाहत को आसानी से समझ सके ।आज किसी भी ब्यापार में एकाधिकार की स्थिति बदल गई है , बल्कि प्रतियोगिता का जमाना आ गया है ।विश्वीकरण से हर क्षेत्र में प्रतियोगिता की भावना बढ़ती ही जा रही है ।इलेक्ट्रानिक्स एवं प्रिंट मिडिया ने ग्राहकों के सामने एक नहीं बल्कि अनेकों विकल्प को जन्म दिया है ।ये अलग बात है कि कन्फ्यूजन की स्थिति बन जाती है । ऐसी स्थिति में जानकारियॉं विशेष कर लोगों की तत् संबंध में ब्यवहारिक अनुभव से बहुत कुछ सीखा व समझा जा सकता है ।अतएव नियमित व संयमित आपसी संपर्क एवं सहयोग से ही किसी भी विषय में , क्षेत्र में विकल्प व कन्फ्यूजन की स्थिति का स्पष्टीकरण आसान हो सकता है ।समय का अभाव व ब्यस्तता की स्थिति ही समय की आप्टिमम उपयोगिता को रेखांकित करता है और समय के पालन से जुड़ी भावनाओं को समझने की सार्थकता सिद्ध करता है ।

इस अवसर पर कु तोशिबा चंदवानी जी का स्वागत कु श्रद्धा बंधु जी ने चंदन का टीका लगा कर किया । गुरू प्रसाद श्री मती संतरा देशलहरा जी के परिवार की ओर से आयोजित की गई।स्व श्री धनी राम खुंटे जी , सेवा निवृत सिनियर परसनल आफिसर (एन टी पी सी) ,ग्राम दर्राभांठा , जिला जांजगीर चांपा के आकश्मिक निधन (जन्म तिथि **1** अगस्त **1944** एवं निधन **3** जुलाई **2013**) पर गुरू वंदना परिवार की ओर से श्रद्धॉजली प्रदान की गई ।इसी कड़ी में '' अगला टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम '' गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर **6** भिलाई मे **493** वीं गुरू वंदना के अवसर पर दिनॉक **15** जुलाई **2013** शाम **6.30** बजे संपन्न होगा , जिसमें समस्त आम जन आमंत्रित हैं ।

(एफ आर जनार्दन)

ब्यूरों चिफ संयोजक

प्रेस विज्ञप्ति दिनॉक– **02 07 2013**

गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर **6** में **491** वें गुरू वंदना के अवसर पर

''टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम संपन्न'' TIPS Of THE FIELD PROGRAMME HELD

गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 भिलाई में 1 जुलाई 491 वें गुरू वंदना के अवसर पर श्री द्वारिका प्रसाद गायकवाड़ जी , एल आई सी अभिकर्ता ने " गुड़ की ओर चिटियॉं " विषय पर अपने अनुभव के टिप्स प्रदान किये । उन्होंने बताया कि गुड़ व चिटियों के रिस्ते किसी से छिपी नहीं है । जहॉं जहॉं भी गुड़ होंगे , चिटियॉं अवश्य झुण्ड के झुण्ड पधारेंगे । अगर गहराई से विश्लेषण किया जाय तो बहुत सारी तथ्यों की जानकारियॉं मिलती है । जहॉं तक चिटियों का सवाल है । इनके संबंध में निरंतर शोध चल रही है । अन्य इनसेक्ट से ये अलग ही विशेष गुण धर्म रखते हैं । चिटियों को कभी कभी सुपर आरगेनिसम कहा जाता है , क्यों कि ये झुण्ड में एक साथ एक हो कर काम करते दिखते हैं । चिटियॉं पूरे संसार के मिट्टियों में पाये जाते हैं । ये एनिमल बायोमास के लगभग 15 प्रतिसत हैं तथा संसार के मानव

वजन से कहीं ज्यादा चिटियों की वजन है । सन् 2006 में ये 11880 एन्ट स्पेसिस रिकार्ड किया गया था । चिटियों के आकार व व्यवहार के आधार पर ः आर्मी एन्ट्स , फायर एन्ट्स , फरोह एन्ट्स , क्रेजी एन्ट्स , विव्हर एन्ट्स , स्लेव मेकर एन्ट्स , जेक जंपर एन्ट्स , बुलेट एन्ट्स , कारपेंटर एन्ट्स , लिटिल ब्लेक एन्ट्स , हनी पाट एन्ट्स , यलो कितरोनेला एन्ट्स , बिग हेड एन्ट्स , लिफ कटर एन्ट्स , बुल डाग एन्ट्स , ग्लाईडंग एन्ट्स आदि विभक्तिकरण किये गये हैं ।

वहुतायत चिटियॉं घरों में , घोसला आदि में घरों के बाहर पाये जाते हैं । भोजन व पानी की तलास में घरों में ये प्रवेश करते हैं । अधिकतर चिटियॉं वर्कर , पंखहीन मादा के प्रकार होते हैं , जो भोजन की तलाश में रहते हैं और अपने कालोनी को व्यवस्थित करते हैं । उनकी खाने व पानी को हटाने से चिटियॉं कम हो जाती हैं । स्लो एक्टिंग इनसेक्टीसाइड से भी चिटियों मे कमी होती है । चिटियॉं सामाजिक इनसेक्ट्स होती हैं , जो आपस में कालोनियॉं बनाकर रहती हैं ।

अगर चिटियों के झुंड को देखना है तो उनकी पसंद के भोजन की व्यस्था करनी होती है । अक्सर देखा जाता है कि गुड़ चिटियों के पसंद की भोजन होते हैं , यही कारण है कि जहॉं भी गुड़ होता है बड़ी जल्दी ही चिटियों का आगमन कतार बद्ध हो कर हो जाता है । साथ ही भोजन को अपने कालोनी में ले जाने का काम भी बड़ी ही व्यवस्थित रूप से टीम भावना के साथ देखी जा सकती है । बगैर कतार तोड़े अनवरत , अनुशासन प्रदर्शित होता है । एन्ट थ्योरी बड़ी ही प्रसिद्ध व प्रचलित प्रक्रिया है जिसे छोटे से बड़े इंडस्ट्रीयल संस्थानों में एच आर डी में उदाहरण के बतौर बताया व सिखाया जाता है ।

अन्य विभिन्न संस्थानों विशेष कर सामाजिक संस्थानों में "गुड़ की ओर चिटियाँ " की प्रक्रिया से सीख व सबक लिया जा सकता है ।आज पूरे विश्व और खास कर भारतीय सामाजिक परिवेश में अनेकों सामाजिक संस्थान कार्यरत हैं ।अपनी अपनी जरूरत व चाहत के हिसाब से अपने अपने समूह को व्यवस्थित व संगठित करने में लगे हैं ।विभिन्न संतों , महात्माओं व महापुरूषों के विचार व मार्ग दर्शन ही अक्सर समाज व समूह को जोड़ने का माध्यम बनता है ।विभिन्न जगहों पर केन्द्र बिन्दुओं का जाल बिछा कर , आपस में संपर्क व सहयोग की भावना के साथ संतों के मानवतावादी विचारधारा को सामने रख कर आकर्षण का केन्द्र बनाने से ही लोगों का रूझान पैदा किया जा सकता है ।एन्ट थ्योरी को ध्यान में रख कर , चिटियों के लगन व अनुशासन से प्रेरणा ले कर सामाजिक कार्यकर्ता अपने समाज को जोड़ने में कामयाब निश्चित रूप से हो सकता है ।जिस तरह चिटियाँ असफल होने के बाद भी अपना प्रयास जारी रखते हैं , ठीक उसी तरह हम भी असफल होने से कभी भी हिम्मत न हारें बल्कि अपने लक्ष्य प्रति सजग रहें ।समाज के बच्चे से बुजूर्ग तक के हर वर्ग की भागीदारी सामाजिक कार्य में सनिश्चित होने से ही अपनापन की भावना पैदा होगा तथा टीम वर्क की संस्कृति का निर्माण होगा ।आइये हम "गुड़ की ओर चिटियाँ "की प्रक्रिया से सीख व सबक लेते हुये अपनी लक्ष्य को सफल बनायें ।

इस अवसर पर श्री द्वारिका प्रसाद गायकवाड़ जी का स्वागत श्री अर्जुन सिंह मनहर जी ने चंदन का टीका लगा कर किया । गुरू प्रसाद श्री पूरन दास बंजारे जी के परिवार की ओर से आयोजित की गई।नई दिल्ली से पधारे श्री सुचानंद बजाज जी ने भी अपने विचार व्यक्त किये ।उत्तरांचल में प्राकृतिक आपदा में दुर्घटना के शिकार लोगों को गुरू वंदना परिवार की ओर से श्रद्धांजली प्रदान की गई ।इसी कड़ी में " अगला टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम " गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर **6** भिलाई मे **492** वीं गुरू वंदना के अवसर पर दिनॉक **8** जुलाई **2013** शाम **6.30** बजे संपन्न होगा , जिसमें समस्त आम जन आमंत्रित हैं ।

(एफ आर जनार्दन)

ब्यूरों चिफ — संयोजक

प्रेस विज्ञप्ति — दिनॉक— **25 06 2013**

गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर **6** में **490** वें गुरू वंदना के अवसर पर

"टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम संपन्न" TIPS Of THE FIELD PROGRAMME HELD

गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 भिलाई में 17 जून 2013 को 489 वें गुरू वंदना के अवसर पर श्री टिकेश बांधे जी , सिनियर टी सी कुम्हारी ने " लहर की दशा व दिशा का प्रभाव " विषय पर अपने अनुभव के टिप्स प्रदान किये ।उन्होंने बताया कि लहर बड़ी ही आम भाषा का शब्द है ।लहर आमतौर से तरल व विशेष कर जल से जुड़ा विधा है ।इसके अलावा अगर लहर का विश्लेषण किया जाय तो पता चलता है कि लहर सर्व व्यापी है ।जहॉं भी या जहॉं की भी बात करें लहर का कोई न कोई रूप मिल जायेगा ।अंडर करेंट की चर्चा व महत्व को कोई भी इंकार नहीं कर सकता ।प्रत्येक विषय विशेष का अंडर करेंट सदैव चलते रहता है ।समय के साथ अंडर करेंट की तीव्रता घटते या फिर बढ़ते रहता है ।

प्रकृति के नियम के अनुसार ही लहर की दशा व दिशा तय होती है ।नदी नाले व समुद्र में पानी की लहर की दशा व दिशा स्पष्ट होती है ।प्रकृति के नियम के आधार पर एक नहीं अनेकों सूत्र उपलब्ध हैं जो लहर की दशा व दिशा को आसानी से प्रदर्शित करता है ।प्रकृति के नियम के साथ छेड़छाड़ करने से अक्सर विकट स्थिति पैदा हो जाती है , जिसका भुगतान स्वयं मनुष्य को ही करना पड़ता है ।गर्मी , बरसात व जाड़ा में प्रकृति का अपना विशिष्ठ गुण व धर्म है , जिसकी जानकारियॉं निश्चित रूप से होनी चाहिये ।तद् अनुरूप ही मानव का अपना गुण व धर्म का पालन होने से ही प्रकृति का संतुलन बना होता है ।ओव्हर स्मार्ट बनने से ही समास्यायें सामने आती हैं ।प्रकृति से छेड़छाड़ करने व उसके परिणाम भुगतने के एक नहीं अनेकों उदाहरण हर पल हर जगह देखने को मिलता है ।

किसी भी प्रकार की विचारधारा की लहर का प्रचारित व प्रसारित होना मानव जीवन ही नहीं अपितु संपूर्ण जगत को प्रभावित करता है ।विचारधारा तो अनेकों प्रकार के हैं , लेकिन ये सारी की सारी विचारधारायें मूल तह दो प्रमुख विचारधारा के आसपास होते हैं : 1 प्राकृतिक विचारधारा – जो प्रकृति के नियमों के अनुरूप होते हैं । 2 अप्राकृतिक विचारधारा – जो प्रकृति के नियमों के विरूद्ध होते हैं ।मानव के मध्य समता , स्वतंत्रता , बंधुत्व व न्याय का होना प्रकृति के नियमों के अनुरूप होता है क्योंकि प्रकृति किसी भी मानव अथवा जीव जन्तुओं के साथ किसी भी

प्रकार का भेदभाव नहीं करता ।ठीक इसके विपरीत मानव मानव के बीच भेदभाव , घृणा , जातिवाद , रूढ़ीवाद , अंधविश्वास आदि विचारधारा को बढ़ावा देने वाले विचार व कार्य को निश्चित रूप से अप्राकृतिक विचारधारा की श्रेणी में लाया जा सकता है ।मानव के मस्तिस्क में सदैव सृजनात्मक व विधवंसक विचार आते रहते हैं ।अपने निहित स्वार्थ के चक्कर में मनुष्य अप्राकृतिक बातों को प्रसय देना शुरू करता है , शनैः शनैः लहर बनती जाती है ।निस्वार्थ व मानवतावाद के पोषक लोग भी अपनी मानवीय प्राकृतिक विचारधारा को प्रचारित व प्रसारित करने में लगे रहते हैं ।इतिहास गवाह है कि इन दोनों ही प्रकार के विचारधाराओं में एक दूसरे को पीछे छोड़ने की होड़ सी लगी रहती है ।सामर्थ्य व उपलब्ध अवसर पर निर्भर करता है कि किस विशेष विचारधारा को बढ़ावा देने के लिये , कब और कैसे उपलब्ध होते हैं ।हमारे देश भारत वर्ष का इतिहास में इन दोनों विचारधाराओं के लहर में अत्यधिक बदलाव आते रहा है ।एक जमाने में सोने की चिड़िया कहलाने वाले देश को न जाने किन किन परिस्थितियों से गुजरना पड़ा है ।इस देश की सामाजिक आर्थिक परिस्थितियाँ कैसी बदलती रहीं , उस तस्वीर का अंदाजा आज की परिस्थिति में लगाया जा सकता है ।अप्राकृतिक / अमानवीय विचारधारा के वजह से ही इस देश के मूल निवासियों को शिक्षा के लिये तरसना पड़ा , जानवरों -कुत्ते बिल्ली से भी बदतर जिंदगी जीने पर मजबूर होना पड़ा ।आज भी हमारे देश में अप्राकृतिक विचारधाराओं की लहर इतनी तेज है कि आम जन न चाह कर भी उसमें फंसते जा रहे हैं ।भ्रम व भय , भाग्य व भगवान की आड़ में आम जनों के भावनाओं से खेला जा रहा है ।बड़ी मेहनत कर के स्वतंत्र भारत का अपना संविधान बना ।संविधान के माध्यम से प्रस्तावना से ले कर प्रत्येक अनुच्छेद में मानवता को बहाल करने की कोशिष की गई है ।संविधानिक प्रावधानों का व्यवहार में न आ पाना एक चिंतनीय विषय है ।आज देश में प्रजातंत्र को बहाल करने के प्रमुख चार स्तंभों ः न्याय पालिका , कार्यपालिका , विधायिका व मिडिया के जिम्मेदारों को पुनः चिंतन करने की नितांत आवश्यकता है ।निश्चित रूप से प्राकृतिक मानवतावाद की लहर चलेगी , जिसमें शांति , प्रेम व भाईचारा का वातावरण निर्मित होगा ।

इस अवसर पर श्री टिकेश बांधे जी का स्वागत श्री पी एल भारती ने चंदन का टीका लगा कर किया । गुरू प्रसाद कु लीना जोशी जी व श्री धनेश राम पुरेना जी के परिवार की ओर से आयोजित की गई।इसी कड़ी में " अगला टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम " गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 भिलाई मे **491** वीं गुरू वंदना के अवसर पर दिनॉक **1** जुलाई **2013** शाम **6.30** बजे संपन्न होगा , जिसमें समस्त आम जन आमंत्रित हैं ।

(एफ आर जनार्दन)

ब्यूरों चिफ संयोजक

प्रेस विज्ञप्ति दिनॉक– **18 06 2013**

गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर **6** में **489** वें गुरू वंदना के अवसर पर

"टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम संपन्न"

गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 भिलाई में 17 जून 2013 को 489 वें गुरू वंदना के अवसर पर श्री अविनाश कुमार बंजारे जी, इंजिनियरिंग के विद्यार्थी ने " समाचार एवं समाचार पत्र " विषय पर अपने अनुभव के टिप्स प्रदान किये ।उन्होंने बताया कि समाचार आमतौर से उसी को कहा व समझा जाता है , जो आज के अखबारों व इलेक्ट्रानिक्स मीडिया के द्वारा प्रचारित व प्रसारित किया जाता है ।आज 188 देशों में लगभग 5 बिलियन व्यक्ति निवास करते हैं और हजारों घटनाएं हर पल घटती रहती हैं, जो समाचार के हिस्से बनते रहते हैं। स्थानीय समाचार, क्षेत्रीय समाचार, प्रादेशिक समाचार, राष्ट्रीय समाचार और अंतर्राष्ट्रीय समाचार, दुनियॉं में हर पल घटित घटनाएं ही उनके आकार व प्रकार व न्यूज एजेन्सियों के संचालकों के नीति व नीयत पर आधारित होता है। हर पल, हर जगह घटनायें तो अनेकों होती हैं, कब व कितना अखबार में छापना है यह तो विभिन्न स्तरों पर आसीन संवाददाता के अलावा पत्र पत्रिकाओं के ब्यूरो चिफ के नीति व नीयत के अलावा उनकी जरूरत व चाहत पर भी निर्भर करता है। यही कारण है कि एक ही घटना को विभिन्न पत्र पत्रिकायें अपनी अपनी तरह से प्राथमिकता देते हैं। अतएव कहा जा सकता है कि घटनायें जो समाचार बनती हैं, उसमें संवाददाता व ब्यूरो चिफ की नीति व नियत के साथ ही उनकी जरूरत व चाहत की भी अहम भूमिका होती है ।

यह प्रकृति का नियम है कि घटना घटने की प्रक्रिया तो सृष्टि के सृजन से ही शुरूवात हो चुकी है। अतः घटना अर्थात समाचार की प्रक्रिया तो सदियों पुरानी है। समाचार पत्र के लिये निश्चित रूप से काफी अर्सा लगा है। मिडिया और समाचार प्रकाशन हाल के वैज्ञानिक युग का देन है। समाचार पत्र के इतिहास मानव अनुभव का ड्रामेटिक चेप्टर सा है। यूरोप में सर्व प्रथम हस्त लिखित न्यूज लेटर ब्यापारियों के मध्य शुरूवात हुआ। 1400 ईस्वी के आसपास जर्मनी में सर्वप्रथम समाचार प्रिंट हुआ। सत्रहवीं सदी में समाचार पत्रों की प्रक्रिया तेजी आयी। औद्योगिकरण क्रान्ति से समाचार पत्र काफी प्रभावित हुये। सन् 1880 में 11314 विभिन्न समाचार पत्रों का रिकार्ड किया गया। सन् 1910 तक आधुनिक समाचार पत्र के सभी आवश्यक प्रारूप या फिचर्स का समावेश हो पाया। जहॉं तक हमारा देश भारतवर्ष का सवाल है । आर एन आई (रजिस्टार ऑफ न्यूस पेपर्स फॉर इंडिया) के अनुसार वर्तमान में भारत में करीबन 82237 रजिस्टर्ड न्यूस पेपर्स है। सन् 2010-11 में ही 4853 न्यूज पेपर्स का रजिस्ट्रेसन हुआ। आज 329204841

से अधिक छोटे बड़े समाचार पत्रों की कापियाँ पूरे देश में खपत हो रही है। भारत में समाचार पत्रों की दौड़ में हिन्दी सबसे आगे चल रही है। उसके बाद क्रमशः इंगलिश, उर्दू, गुजराती, तेलगू, मराठी, बंगाली, तमील, उड़िया , कन्नड़ , मलयालम आदि भाषा के समाचार पत्र आते हैं। हिन्दी राष्ट्रीय भाषा है, इस हिसाब से भी हिन्दी समाचार पत्र को सबसे आगे होना चाहिये । आज पूरे देश को हिन्दी भाषा के आधार पर "क","ख" व "ग" क्षेत्र निर्धारित कर हिन्दी भाषा का प्रचार प्रसार तेजी से जारी है ।

न्यायपालिका, कार्यपालिका, विधायिका के बाद मिडिया याने कि समाचार पत्र प्रजातंत्र का चौथा स्तंभ माना जाता है। इसमे कोई दो मत नहीं है कि चौथा स्तंभ ही अन्य तीनों स्तंभ को भी प्रभावित करता है। समाचार पत्र की भूमिका तब से अब तक अति महत्व पूर्ण रही है। संविधान के निर्माताओं ने **26** जनवरी **1950** को देश का संविधान सौपते हुये स्पष्ट रूप से अपने विचार रखे थे ः " **26** जनवरी **1950** को हम विरोधाभास की जिंदगी में प्रवेश कर रहे हैं – राजनीतिक दृष्टि से एक आदमी का एक वोट के हिसाब से समानता है लेकिन आर्थिक व सामाजिक दृष्टि से गैर बराबरी बनी रहेगी । प्रजातंत्र को संचालित करने वालों की जिम्मेदारी बन जाती है कि आर्थिक व सामाजिक क्षेत्र में ब्याप्त गैर बराबरी को जितना जल्दी हो सके दूर कर लेनी चाहिये। अन्यथा मेहनत से राजनीतिक क्षेत्र में प्राप्त बराबरी भी खटाई में पड़ सकती है ।"आकड़ों से पता चलता है कि आर्थिक व सामाजिक गैर बराबरी कम न हो कर बढ़ती ही जा रही है । समाचार पत्र प्रजातंत्र के संचालन में चौथा स्तंभ होने के नाते आर्थिक व सामाजिक गैर बराबरी को दूर करने की दिशा में आवश्यक बदलाव की जरूरत है। वर्तमान समाचार पत्र मात्र **10**% पूंजीपतियों के हाथों का खिलौना बन कर रह गया है। शेष **90**% जनता की समस्या से उन्हे कोई लेना देना नहीं है। गरीबों के समाचार छपते भी हैं तो लूट खसोट बलात्कार की बाते ही ज्यादा छपती है वह भी लोकल समाचार बन कर रह जाती है। क्योंकि लूट खसोट शोषण व अन्याय अत्याचार करने वाले वही सामंती पूंजीपति वर्ग ही होते है। वहीं सामंती लोगों के साथ इस तरह की घटना को राष्ट्रीय समाचार बना दिया जाता है।अन्ना कूद पड़ते है इंडिया गेट में मशाल जुलुस निकल जाती है नये कानून बनाने की बात चलती है।
समाचारों का ब्लेक आउट व ब्लेक मेल न हो कर जनता की जरूरत व चाहत का ध्यान रखने से सबका हित संभव है। समाचार पत्र विशेष के प्रति आम जनों का रूझान में स्थायित्व आना आज की जरूरत जान पड़ता है। अगर सर्वे करें तो पता चलता है कि स्पष्ट व निःस्वार्थ समाचार पत्र की चाहत में ग्राहकों में निरंतर समाचार पत्र बदलने की प्रवृति देखी जा सकती है। विज्ञापन से अर्थ हासिल करने की होड़ से समाचार की महत्ता सेकेण्डरी होने लगी है, जिस पर पुनः चिंतन की आवश्यकता है। आशावादी माहौल ही

समाज, देश के साथ ही संपूर्ण मानव समाज में प्रेम व भाईचारा बना कर प्रगति के पथ पर निरंतर अग्रेसित हो सकता है। आज के समय में समाचार पत्र पर ही आम जनता का नजर टीका हुआ है, वे आम जनता की समाचार छापे या न छापे फिर भी हमें उम्मीद है कि समाचार पत्र निरास नहीं होने देगी।

इस अवसर पर श्री अविनाश कुमार बंजारे जी श्री का स्वागत श्री राज कमल कुर्रे जी ने चंदन का टीका लगा कर किया। स्व विद्याचरण शुकला जी, जो **25** मई को सुकमा में नक्सली हमला में घायल हुये थे और जिनका देहावसन **14** जून **2013** को वेदांता हास्पीटल नई दिल्ली में हुआ था को गुरू वंदना परिवार की ओर से विनम्र श्रद्धांजली दी गई। उन सभी लोगों को जिन्हे नक्सली हमले के नाम पर मौत का घाट उतार दिया गया था सबको श्रद्धांजली दी गयी खासकर कांगेस प्रदेशाध्यक्ष नंदकुमार पटेल पूर्व मंत्री व विपक्ष के नेता महेन्द्र कर्मा और छत्तीसगढ़ के वर्तमान मुख्यमंत्री रमनसिंह जी के विरोध में चुनाव लड़ने वाले राजनांदगांव के पूर्व विधायक मुदलीयार के साथ अन्य सभी मारे गये लोगों को श्रद्धांजली भेंट की गयी और इस विभत्स घटना पर सरकारी तंत्र व शासन प्रशासन के साथ सत्ताधारी पक्ष की गैरजिम्मेदाराना कार्य के लिये निंदा प्रस्ताव्ए पारित किया गया। गुरू प्रसाद श्री मती लक्ष्मी बाई बंजारे जी के परिवार की ओर से आयोजित की गई।इसी कड़ी में '' अगला टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम '' गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर **6** भिलाई मे **490** वीं गुरू वंदना के अवसर पर दिनॉक **24** जून **2013** शाम **6.30** बजे संपन्न होगा , जिसमें समस्त आम जन आमंत्रित हैं ।

(एफ आर जनार्दन)

ब्यूरों चिफ संयोजक

$$

प्रेस विज्ञप्ति दिनॉक- **11 06 2013**

गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर **6** में **488** वें गुरू वंदना के अवसर पर TIPS Of THE FIELD PROGRAMME HELD

गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 भिलाई में 10 जून 2013 को 488 वें गुरू वंदना के अवसर पर श्री मनी राम सोनवानी जी, भिलाई इस्पात कर्मी एवं अध्यक्ष सतनाम युवा समिति सेक्टर 4 भिलाई ने "अवसरों की सार्थकता " विषय पर अपने अनुभव के टिप्स प्रदान किये ।उन्होंने बताया कि आम बोलचाल में अवसरवादी का जिक्र किया जाता है ।अवसरवादी के प्रति आमजनों का नफरत सी भावना बन जाती है ।आखिर में अवसर व अवसरवादी क्या होता है ? इसे जानना व समझना जरूरी सा बन जाता है। प्रत्येक व्यक्ति के साथ चार परिस्थितियॉं प्रत्येक क्षण जुड़ा होता है ः पहला – उसकी खुद का सामर्थ्य, दूसरा - उसकी खुद की कमजोरियॉं , तीसरा – खुद से जुड़ी उपलब्ध अवसर जिसका उपयोग वह अपने तरीका से कर सकता है, चौथा – हर पल जीवन में अनेक प्रकार की चुनौतियॉं आती रहती हैं। इन चारो ही परिस्थितियों को ध्यान में रख कर निर्धारण किये गये लक्ष्य पूर्ण होने की संभावना अधिक होती है ।जहॉं तक अवसर का प्रश्न है, अगर बारीकी से विश्लेषण किया जाय तो अवसर की प्राप्ति व अवसर से वंचित होने में स्वयं मनुष्य ही जिम्मेदार होता है। परिवार, समाज तथा अन्य समस्त संबंधित जनों के साथ संबंध की दशा व दिशा ही उसकी अवसरों की मात्रा को घटाता या फिर बढ़ाता है। यही कारण है कि हर व्यक्ति का अवसरों की मात्रा एक सी नहीं होती। कारण कि उनका संबंध संबंधित जनों से एक सी नहीं होती। निःसंदेह संबंधित जनों के सामर्थ्य तो अवसर बन ही सकते हैं, साथ ही संबंधित जनों के अवसर भी खुद के अवसर बन सकते हैं। यह तभी संभव है, जब हमारा संबंध दूसरों से अपनापन की भावना से हो।जीवन संबंधों का जाल है।जाल सघन से सघन व विरल से विरल हो सकता है।जिस व्यक्ति का संबंध का जाल जितना सघन से सघन होता है, उसी मात्रा में उसकी लोकप्रियता होती है।ठीक इसके विपरीत जिस व्यक्ति का संबंध का जाल जितना ही विरल होता है, एकांतवादी जीवन की तरफ उन्मुख रहता है।संबंध को सघन बनाने की तकनीक को वर्तमान में हर जगह, हर पल महत्व दिया जा रहा है।हर सरकारी व गैर सरकारी संस्थानों में "एच आर" याने कि ह्यूमन रिलेसन विभाग अवश्य मिलेंगे।हालाकि अधिकतर जगहों पर इसके सही अर्थ को समझा ही नहीं गया है, सिर्फ औपचारिकता निभाने की परम्परा सी बन गई है।जहॉं व जिन्होंने भी "ह्यूमन रिलेसन" के सही अर्थ को समझा है, आम से खास की श्रेणी में अपने आप आ जाते हैं।अतएव अवसरों में निरंतरता वृद्धि के लिये संबंधों के जाल को ज्यादा से ज्यादा सघन व मधुर बनाने की आवश्यकता है।जाल की मजबूती व टिकाऊपन भी अपेक्षित होता है।प्रेम व भाईचारा द्वारा बुना गया संबंधों के जाल को तोड़ पाना आसान नहीं होता।छल कपट से बुना गया संबंधों का जाल ज्यादा टिकाऊ नहीं होता।पोल खुलने पर अक्सर टूट व बिखर जाते हैं

।मानवतावादी संतों व महात्माओं ने प्रेम व भाईचारे पर आधारित संबंधों के जाल बनाने व फैलाने पर सदैव जोर डाले थे।भारतीय संविधान भी समता, स्वतंत्रता, बंधुत्व व न्याय पर ही आधारित है, जो प्रेम व भाईचारा को बढ़ावा देता है। लेकिन संविधान के पालन करवाने वालों व पालन करने वालों की नियत व नीति का प्रश्न खड़ा हो जाता है।

प्राप्त अवसरों का का बड़ा प्रश्न खड़ा हो जाता है।अवसरों का सदुपयोग व दुरूपयोग दोनों ही पहलू होते हैं। अवसर के दुरूपयोग का सदुपयोग के ऊपर हावी होने से ही आज अवसरवादी व उसके प्रति ह्येय की भावना बनने का बल मिला है।अगर अवसर का सदुपयोगिता होने की अधिकता होती, तो शायद मानव मस्तिस्क पटल में अवसरवादी के प्रति आदर की भावना होती।अनेकों सम्मानीय जनों ने अवसर की सदुपयोगिता को सामने रखते हुये अपने आप को अवसरवादी बताने में गौरव महसूस किया है।इसी कड़ी में माननीय साहब कांशीराम जी का नाम इतिहास में अमर रहेगा, जिन्होंने अपने आप को अवसरवादी कहलाने में कभी ग्लानी महसूस नहीं किया अपितु अपने आप को सदैव गौरवान्वित महसूस किया। उन्होंने अवसरों का, अपने खुद के लिये नहीं बल्कि सदियों से मानवता से वंचित समाज को उनकी हक दिलाने में सदुपयोग किया। ऐसे महामानव से हम अवसरों का निर्माण, अवसरों का समाज, देश हित में सदुपयोग करने का प्रेरणा लें।निश्चित ही अवसरों की सार्थकता सिद्ध हो जायेगी ।

अवसरवादी बनना और अवसरों का उपयोग करना दो भिन्न 2 पहलु हैं। किसी को अवसर मिलता है और वह अवसर का उपयोग नहीं कर पाता कल्पना में ही समय बिता देता है ऐसा व्यक्ति भावना में बहकर अवसर को खो देता है और दूसरे अवसर की तलाश करते रहता है। ऐसे भावुक लोग कभी अपने अधिकार का सही उपयोग नहीं कर पाते। उन्हें केवल पछतावा हाथ लगता है– समय चूक पुनि का पछतावा। बीते पल नहीं वापस आवा।। अतः समय रहते सही निर्णय लेना अवसर का उपयोग कहलाता है। वहीं अवसरवादी लोग केवल अपने निजी स्वार्थ या व्यक्तिगत लाभ के लिए समय का उपयोग करते हैं। किसी को सत्ता मिला और सत्ता या पद का दुरूपयोग अपने निजी स्वार्थ के लिए करता है समाज को कोसों दूर पीछे छोड़ देता है ऐसे लोग अवसरवादी या स्वार्थी कहलाते हैं। माखी गुड़ में गड़ी रहे पंख रहे लिपटाय, हाथ मलै और सिर धुनै लालच बरी बलाय। लोभ– लालच में फंस कर अपने ही सिर के बाल उधेड़ते पछतावा में ही सारा समय बिता देते है। माया मरि न मन मरा मरि मरि गया शरीर, आशा तृष्णा ना मरि कह गये दास कबीर। आज देश का एक क्रान्तिकारी आन्दोलन इसी अवसरवादिता के गलत उपयोग के कारण पिछड़ गया। सामाजिक परिवर्तन की लहर पुनः यथास्थिति के हामी वर्ग के हाथ का कठपुतली बन गया। हमे इससे सबक लेना चाहिए और समय रहते अपने अधिकारों का उपयोग दुश्मन को पीछे ढकेलने में लगाना चाहिए यही अवसर की बुद्धिमता होगी।

इस अवसर पर श्री मनी राम सोनवानी जी का स्वागत श्री एस पी डिंडोरे जी ने चंदन का टीका लगा कर किया। गुरू प्रसाद श्री पवन कुर्रे जी के परिवार की ओर से आयोजित की गई। इसी कड़ी में '' अगला टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम '' गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 भिलाई मे **489** वीं गुरू वंदना के अवसर पर दिनॉक **17** जून **2013** शाम **6.30** बजे संपन्न होगा , जिसमें समस्त आम जन आमंत्रित हैं ।

(एफ आर जनार्दन)

ब्यूरोचिफ संयोजक

****

प्रेस विज्ञप्ति दिनॉक– **04 06 2013**

गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर **6** में **487** वें गुरू वंदना के अवसर पर "टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम संपन्न"

गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर **6** भिलाई में **03** जून **2013** को **487** वें गुरू वंदना के अवसर पर श्री आशीष कुमार जॉगड़े जी ,मेकेनिकल इंजिनियरिंग ग्रेजुएट ने '' पारिवारिक कार्यक्रमों की महत्ता'' विषय पर अपने अनुभव के टिप्स प्रदान किये ।उन्होंने बताया कि भारतीय सामाजिक परिवेश में सदियों से परिवार का विशेष महत्व रहा है ।भारत की अधिकांश आबादी ग्रामीण क्षेत्र से जुड़ा है ।पांच लाख छिहत्तर हजार से अधिक गॉवों में लगभग **80** प्रतिसत भारत की आबादी गांव में ही निवास करती है ।गॉवों में आज भी संयुक्त परिवार का प्रचलन है ।हालाकि आज संयुक्त परिवार की तरफ रूझान कई कारणों से कम होने लगी है ।शहरों की ओर सुखद व दुखद स्थानांतरण (Prospective & Distress Migration) में तेजी आयी है ।यही कारण है कि गॉवों की आबादी क्रमशः कम होने लगी है और शहर की आबादी में बढ़ोत्तरी हो रही है ।आज आम तौर से गॉवों में रहने के बजाय शहरों में रहने व गुजर बसर करने की प्रवृति बढ़ी है।

व्यक्ति जहॉं भी निवास करे परिवार तो साथ ही चलती है ।हर परिवार की अपनी अपनी मान्यता तो रहती ही है।सामाजिक रीति-रीवाज का परिपालन करना तो आवश्यक हो ही जाता है।जनम् से मरण् तक हर समाज की अपनी अपनी रीति - रीवाज, संस्कार व संस्कृति होती है। हालाकि समय के अनुसार रीति - रीवाज में बदलाव आना कोई नई बात नहीं है । विकसित , विकासशील व अविकसित समाज का दर्पण

उनका रहन- सहन , खान-पान व रीति - रीवाज होता है। विकसित समाज इस मायने में काफी सतर्क होता है। समय, काल व परिस्थिति के अनुरूप बदलाव उनकी अपनी पहिचान होती है ।

पारिवारिक कार्यक्रमों को बारीकी से अध्ययन व विश्लेषण किया जाय तो बहुत सी अनकहें बातें सामने आ जाती हैं। इसमें किसी प्रकार की संका नहीं होना चाहिये कि पारिवारिक कार्यक्रमों का आधार संबंधित समाज के संस्कार, संस्कृति व रीति - रीवाज पर ही निर्भर करता है। ग्रामीण- शहरी परिवेश का मसला आने से काफी कुछ परिवर्तन भी होने लगे हैं। ग्रामीण परिवेश में पारिवारिक कार्यक्रम का दायरा अपेक्षाकृत संकुचित नजर आता है, शहरी परिवेश में दायरा में खुलापन ज्यादा होता है । जाति , धर्म का बंधन गाँवों में कहीं अधिक होता है , वही शहरी क्षेत्रों में बंधन खुलता नजर आता है । इलेक्ट्रानिक्स व प्रींट मीडिया ने पारिवारिक कार्यक्रमों के आकार व प्रकार को काफी हद तक प्रभावित किया है ।पारिवारिक कार्यक्रमों को दो श्रेणी में विभक्त किया जा सकता है ः पहला - अनिवार्य पारिवारिक कार्यक्रम जो समाज की संस्कार, रीति रीवाज पर होता है। दूसरा — ऐच्छिक पारिवारिक कार्यक्रम जो परिवार विशेष अथवा परिवार के सदस्य विशेष के सोच, उनकी आर्थिक स्थिति, वातावरण पर आधारित होता है। पारिवारिक कार्यक्रमों में परिवार के सदस्यों व रिस्तेदारों की उपस्थिति अनिवार्य सा रहता है। यह परिवार के सदस्यों की आपसी संबंध तथा रिस्तेदारों की आपसी लगाव पर भी निर्भर करता है। पारिवारिक कार्यक्रमों के माध्यम से ही परिवार के सदस्यों , रिस्तेदारों को कुछ दिनों के लिये एक साथ रहने, एक दूसरे को समझने का अवसर मिलता है।अंदरूनी संबंधों की जानकारियाँ भी मिलती हैं ।परिवार के बारे में सही जानकारियाँ हासिल करने का माध्यम समय समय पर आयोजित पारिवारिक कार्यक्रम ही होता है ।पारिवारिक कार्यक्रम सुखद अवसर अथवा दुखद अवसर से संबंधित हो सकता है ।दोनों ही तरह के अवसरों में एक दूसरों का सहयोग अपेक्षित होता है । कार्यक्रम को सुलझाने अथवा उलझाने का प्रयास भी कोई नई बात नहीं है।आदर्स परिवार बनने व बनाने की दिशा का होना समाज व देश हित में ही होता है ।

पारिवारिक कार्यक्रम की सफलता के लिये कार्यक्रम के पहले ही परिवार के जिम्मेदार लोगों की सलाह मसविरा के साथ ही परिवार के प्रत्येक सदस्य की भागीदारी सुनिश्चित होने से ही परिवार व पारिवारिक कार्यक्रम के प्रति अपनापन संभव है। पारिवारिक कार्य क्रम की आकार व प्रकार का निश्चित होना साधन की उपलब्धता पर निर्भर करता है ।पारिवारिक कार्यक्रम को सफल बनाने के लिये उपलब्ध साधन की जानकारी से अधिक मायने अपनी अपनी

कमजोरी को जानना होता है। अक्सर अपनी कमजोरी को छिपाया जाता है।आज विभिन्न प्रकार के अवसर भी उपलब्ध हैं, जिनका सदुपयोग करना आना चाहिये ।चुनौती कभी पीछा नहीं छोड़ती, सदैव संभावित चुनौती का नजर अंदाज न करें ।लंबे अंतराल के बाद रिस्तेदारों का मेल मिलाप व एक दूसरे के बारे में जानकारियॉं हासिल करना पारिवारिक कार्यक्रमों के माध्यम से ही संभव है।पुराने पीढ़ी के रिस्तेदारों का परिचय नये पीढ़ी के रिस्तेदारों से होना व आपसी संपर्क एवं सहयोग बनाये रखने का माध्यम भी पारिवारिक कार्यक्रम ही होता है।कार्यक्रम संपन्न होने के उपरांत , संपन्न कार्यक्रम की समीक्षा होना आवश्यक है।कार्यक्रम के दौरान प्राप्त अनुभव को नजर अंदाज न किया जाय सदस्यों की व्यक्तिगत व्यवहारों पर भी खुले दिमाक से चर्चा कर के सीख व सबक लेते हुये सुधारात्मक प्रयास निश्चित ही परिवार , समाज व देश हित में होगा ।

इस अवसर पर श्री आशीष कुमार जॉंगड़े जी का स्वागत श्री रामेश्वर टंडन जी ने चंदन का टीका लगा कर किया । गुरू प्रसाद श्री देव कुमार जॉंगड़े जी के परिवार की ओर से आयोजित की गई। इसी कड़ी में " अगला टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम " गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 भिलाई मे 488 वीं गुरू वंदना के अवसर पर दिनॉंक 10 जून 2013 शाम 6.30 बजे संपन्न होगा , जिसमें समस्त आम जन आमंत्रित हैं ।

(एफ आर जनार्दन)
संयोजक

<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<<

प्रेस विज्ञप्ति दिनॉंक– 28 05 2013

गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 में 486 वें गुरू वंदना के अवसर पर "टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम संपन्न"

गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 भिलाई में 27 मई 2013 को 486 वें गुरू वंदना के अवसर पर श्री मनबोध बघेल जी ,भिलाई इस्पात संयंत्र कर्मी एवं वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता ने " प्रतिस्पर्धा - क्यों और कैसे ? " विषय पर अपने अनुभव के टिप्स प्रदान किये । उन्होंने बताया कि समय के साथ ही जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा की भावना बढ़ती गयी है ।पहले का नारा " कड़ी मेहनत पक्का इरादा " आज परिमार्जित हो

कर " वर्क हार्ड " न रह कर " वर्क स्मार्टली " हो गया है। आज हर कोई अपने आप को स्मार्ट साबित करने में लगे हैं। इलेक्ट्रानिक्स मिडिया ने हर व्यक्ति को स्मार्ट बनाने में काफी सहयोग दिया है ।प्रचार प्रसार के माध्यम में व्यापक परिवर्तन हुआ है। आज चिट्ठी या पत्र लिखना इतिहास की बात बन गई है। छोटे बच्चों से बड़े बुजुर्ग तक, अमीर से गरीब तक अपना संदेश मोबाइल में एस एम एस व कम्प्यूटर में ई-मेल के जरिये बड़ी आसानी से इस्तेमाल करने में लगे हुये हैं । आज इलेक्ट्रानिक्स मीडिया के जरिये बड़ी द्रुत गति से प्रतिस्पर्धा की भावना व कार्य बढ़ती जा रही है । आज घरों में छोटे बच्चे अपने बड़े बुजुर्गो को मोबाइल व कम्प्यूटर का इस्तेमाल करना सीखा रहे हैं । इस दिशा में वर्तमान पीढ़ी अपनी पुरानी पीढ़ी से कई कदम आगे चलते नजर आ रहे हैं ।आज माँ बाप को पता ही नहीं है कि इनके बच्चे मोबाइल व कम्प्यूटर का इस्तेमाल कब व कैसे कर रहे हैं, जिसे पुरानी पीढ़ी की कमजोरी ही कहा जा सकता है ।

जीवन में बेहतरी के प्रतिस्पर्धा की भावना कल आज व कल सदैव जरूरी है। प्रतिस्पर्धा की दशा व दिशा का विशेष मायने होता है ।मानव जीवन को बेहतरी बनाने के लिये प्रतिस्पर्धा एक सकारात्मक प्रक्रिया है।वही मानव जीवन को बदहाली बनाने के लिये प्रतिस्पर्धा निश्चित रूप से नकारात्मक प्रक्रिया है ।आज विश्वीकरण व विज्ञान की चमत्कार ने प्रतिस्पर्धा के अवसर निश्चित रूप से बढ़ाया है। प्रतिस्पर्धा की दशा व दिशा को जानना भी बहुत जरूरी है। साधन का सदुपयोग व दुरूपयोग में एक दूसरे को पीछे छोड़ने की होड़ नजर आती है।मोबाइल व कम्प्यूटर के बटन क्लीक करने मात्र से ही सदुपयोग अथवा दुरूपयोग की श्रेणी निश्चित हो जाती है।साधन की विशेष जानकारी नहीं होने से भी अनजाने में आम आदमी साधन का दुरूपयोग कर डालता है। चालाक लोगों द्वारा आम जनता को बेवकूफ बनाने का गोरख धंधा भी बड़े पैमाने पर चल रहा है।अपने ही सही रास्ते पर चलने वालों को भी गुमराह का शिकार होना पड़ रहा है।साधन स्तेमाल की सही जानकारी आज की बड़ी चुनौती नजर आती है।

जीवन के हर क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा चल रही है।जीवन को संचालित करने वाले हर पावर चाहे राजनिति हो, नौकरशाही हो, जमीदारी हो, आर्थिक हो या फिर सांस्कृतिक पावर ही क्यों न हों, लोगों का निशाना हर पावर के तरफ नजर आता है। राजनीतिक पावर तो मास्टर चाबी ही है, इसीलिये राजनीतिक पावर याने कि मास्टर चाबी को हासिल करने की स्पर्धा सबसे ज्यादा हर समय रही है।आज इलेक्ट्रानिक्स मीडिया आने से इस क्षेत्र में स्पर्धा और ही ज्यादा होने लगी है। देश का हर नागरिक जाने अनजाने में राजनीतिक पावर के निकट जाना चाहता है। सरकारी तंत्र व गैर सरकारी तंत्र भी अपने अपने हिसाब से वर्तमान में उपलब्ध साधनों का इस्तेमाल कर रहे हैं। देखा जा रहा है कि अनेकों जगहों व अवसरों पर गैर सरकारी तत्र साधन का अपने तरह से इस्तेमाल करने में सरकारी तंत्र से काफी आगे नजर आते हैं। छत्तीसगढ़ के आदिवासी

क्षेत्र में हाल ही में घटित घटना इसका पुख्ता सबूत है ।यात्रा के माध्यम से एक दूसरे को प्रतिस्पर्धा में पीछे छोड़ने की मंशा कभी कभी दुखद घटनाओं को अंजाम देता है, जिससे सबक लेने की जरूरत है ।

प्रतिस्पर्धा क्यों और कैसे ? को समझना निहायत जरूरी है। हम प्रतिस्पर्धा की भावना जरूर रखें साथ ही प्रतिस्पर्धा के आकार व प्रकार को भी समझें। बिना सोचे समझें प्रतिस्पर्धा में भाग लेने से लेने के देने भी पड़ सकते हैं।भूत से सीख व सबक ले कर वर्तमान व भविष्य को सुरक्षित व खुशहाल बनाया जा सकता है, जो हमारा एक लक्ष्य जरूर हो ।

इस अवसर पर श्री मनबोध बघेल जी का स्वागत श्री रमेश कुमार बघेल जी ने चंदन का टीका लगा कर किया । गुरू प्रसाद श्री दसरथ यादव जी के परिवार की ओर से आयोजित की गई।विगत **25** मई **2013** को सुकमा में हादसे के शिकार स्व. महेन्द्रा कर्मा जी , स्व.नंदकुमार पटेल जी , स्व. दिनेश पटेल जी , स्व उदय मुदलियार जी सहित दर्जनों भर शहिदों को विनम्र श्रद्धांजली , गुरू वंदना परिवार की ओर से दो मिनट का मौन धारण कर प्रदान की गई ।

इसी कड़ी में '' अगला टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम '' गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर **6** भिलाई मे **487** वीं गुरू वंदना के अवसर पर दिनॉक **3** जून **2013** शाम **6.30** बजे संपन्न होगा , जिसमें समस्त आम जन आमंत्रित हैं ।

(एफ आर जनार्दन)
संयोजक

प्रेस विज्ञप्ति दिनॉक- **24 05 2013** गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर **6** में **485** वें गुरू वंदना के अवसर पर "टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम संपन्न" गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर **6** भिलाई में **20** मई **2013** को **485** वें गुरू वंदना के अवसर पर श्री देव प्रसाद आनंद जी ,भिलाई इस्पात संयंत्र कर्मी एवं वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता ने '' जीवन में प्राथमिकता के पल '' विषय पर अपने अनुभव के टिप्स प्रदान किये ।उन्होंने बताया कि मानव जीवन में हर पल छोटे से बड़े कार्यो को करने के लिये उलझन सी बनी होती है ।कौन से कार्य को पहले करें या प्राथमिकता किस काम को दिया जाय , इस बात को ले कर दिमाकी कसरत चलते रहता है।जानकार व अनुभवशील व्यक्ति सरलता से कार्यो की प्राथमिकता प्रदान कर बिना ज्यादा समय गंवाये कार्यो को संपादित करते जाता है। वही अधिकतर लोग जानकारी व अनुभव के अभाव में प्राथमिकता निर्णय न कर पाने की स्थिति में अनावश्यक रूप से समय की बर्बादी कर लेते हैं ।विकट स्थिति तो तब

पैदा हो जाती है , जब जानकारी नहीं होने से गलत प्राथमिकता कर डालते हैं व वांछित परिणाम नहीं मिलने से तनाव ग्रस्त हो जाते हैं ।बार बार प्राथमिकता गलत हो जाने व वांछित परिणाम नहीं मिलने से व्यक्ति एकदम ही टुट सा जाता है , दिमांक ही काम करना बंद कर देता है ।कार्यो की प्राथमिकता निश्चित करने में व्यक्ति की जानकारी या अनुभव का विशेष महत्व होता है ।जानकारियॉं या तो व्यवहारिक हो सकती है या फिर सिद्धांतिक ।दोनों ही प्रकार की जानकारियों का अपना अपना महत्व होता है ।देखा गया है कि व्यवहारिक जानकारी या अनुभव का अपेक्षाकृत विशेष महत्व होता है ।एक अशिक्षित व्यक्ति भी व्यवहारिक जानकारी के आधार पर कार्यो की प्राथमिकता को अच्छी तरह समझ सकता है ।अल्पकालीन व दीर्घकालीन परिणाम को समझना भी जरूरी होता है ।विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत अनुसंधान संस्थान अल्पकालीन व दीर्घकालीन परिणाम की ब्याख्या आसानी से कर लेते हैं ।इस बात को समझने के लिये व्यक्ति का शिक्षित होना अनिवार्य सा हो जाता है ।भारतीय सामाजिक परिवेश में शिक्षा की अपनी कहानी है ।शिक्षा संपन्न व्यक्ति व वर्ग ने अपनी अल्पकालीन व दीर्घकालीन परिणाम को समझ कर वर्षो पहले अपनी अपनी प्राथमिकता निश्चित कर लिये हैं ।वही शिक्षा से वंचितों को इस दिशा में सोचने की प्रक्रिया सन् **1825** में शिक्षा सेक्यूलर होने के बाद ही शुरू हो पाया ।अतएव सन् **1825** के पहले की स्थिति व बाद की स्थिति और विशेष कर देश में सन् **1950** में भारतीय संविधान के लागू होने के बाद से ब्यापक बदलाव परिलक्षित हुआ है ।नकारा नहीं जा सकता कि जानकारियों के साथ ही प्राथमिकताा के आकर व प्रकार में परिवर्तन होता रहता है ।

व्यक्तिगत प्राथमिकता , पारिवारिक प्राथमिकता , सामाजिक प्राथमिकता , राष्ट्रीय प्राथमिकता के साथ ही मानवीय प्राथमिकता का विशेष महत्व होता है ।अपनी खुद के सोच के आधार पर ही प्राथमिकता का दायरा विभिन्न ब्यक्तियों के लिये विभिन्न प्रकार के होते हैं ।विकसित , विकासशील व अविकसित किसी भी परिवेश में उनकी प्राथमिकता को देख व समझ कर आसानी से विश्लेषण किया जा सकता है । प्राथमिकता के निर्णय को प्रभावित करने के लिये चालाक लोगों द्वारा इगो गेम्स् भी खेला जाता है ।यह जिंदगी के हर क्षेत्र , हर स्तर पर लागू होता है ।देखा गया है कि चुनावी रणनीति में इगो गेम्स् का उपयोग सबसे ज्यादा देखा जाता है ।चालाकों द्वारा आम जनों को लाचार व गुलाम रखने का कुचक्र तो सदियों से ही चलते आ रहा है ।चुनाव के अवसर पर लाचारी व गुलामी का का फायदा उठाने का होड़ ,चालाकों के मध्य स्पष्ट नजर आता है ।लाचार व गुलाम लोग इस इगो गेम्स् को समझ ही नहीं पाते हैं ।ऐसी स्थिति में लाचार/ गुलाम व्यक्ति अथवा समूह के शुभ चिंतकों का दायित्व बन जाता है कि वे ना समझ लोगों को उचित मार्ग दर्शन करें ।बड़ी दुख की बात है कि अपने आप को अगुवा समझने वाला व्यक्ति भी अपनी खुद की लालच को त्याग नहीं कर पाता और चालाक लोगों से ही बारगेनिंग करते रहता है ।इसके कई उदाहरण वर्तमान परिवेश में भी देखे जा सकते हैं ।अगर किसी भी समाज के शिक्षित व

समझदार वर्ग इस बात को समझ कर आमजनों के बीच हकीकत की लहर चलायें तो निश्चित ही लालची प्रवृति के व्यक्ति भी चिन्हित होगा और उसकी बारगेनिंग की योजना धरी की धरी रह जायेगी ।अल्पकालीन व दीर्घकालीन परिणाम का आधार इतिहास ही होता है ।आज की ज्वलंत समस्या आरक्षण का मसला का आधार **24** सितम्बर सन् **1932** में महात्मा गाँधी जी व डॉ बीर आर आंबेडकर जी के बीच "खोली नं **32** यरवदा जेल पूना" में संपन्न पूना पेक्ट ही है , जिसे जानना व समझना प्रत्येक संबंधित जनों के लिये अनिवार्य हो जाता है ।यह संबंधित समाज के शिक्षितों के लिये एक बड़ी चुनौती है , जिसे स्वीकार करने की आवश्यकता है ।

लार्ड बुद्धा चेनल के संबंध में व्यापक जानकारियॉ, नागपुर से पधारे श्री वामन सोमकुंवर जी चिफ कन्व्हेनर लार्ड बुद्धा मैत्री संघ ने दी । इस अवसर पर श्री देव प्रसाद आनंद जी का स्वागत श्री कुमार भारद्वाज जी ने चंदन का टीका लगा कर किया । गुरू प्रसाद कु बिंदेश्वरी सोनवानी जी के परिवार की ओर से आयोजित की गई।

तीन दिवसीय **10 ,11** व **12** मई **2013** मूलनिवासी कला साहित्य और फिल्म फेस्टिवल **2013**

नेहरू सांकृतिक भवन , सेक्टर 1 भिलाई (छत्तीसगढ़) में संपन्न द्वारा ः संयुक्त आयोजन समिति सामाजिक – आर्थिक बदलाव के लिये कार्यरत गैर- राजनीतिक संस्थाओं एवं व्यक्तियों का स्वतः स्फूर्त संयुक्त प्रयास

नेहरू हाउस सेक्टर 1 भिलाई में तीन दिवसीय " मूलनिवासी कला साहित्य एवं फिल्म फेस्टीवल **2013** " में मूलनिवासियों से जुड़े मुद्दे पर वैचारिक विमर्श के अलावा कई फिल्मों का प्रदर्शन हुआ। समापन पर भिलाई स्तील प्लांट के ई डी (पी & ए) श्री लांग्पा टी शेरपा मुख्य अतिथि थे। उन्होंने समाज में जागृति के लिये ऐसे आयोजनों को महत्वपूर्ण घटना करार दिया ।आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वालों को स्मृति चिन्ह दे कर सम्मानित भी किया।

फेस्टिवल में पेंटिंग, शिल्पकला, छायाचित्र एवं मूलनिवासी साहित्य की प्रर्दशनी लगाई गई। सेक्टर 1 भिलाई की सतनाम महिला कल्याण समिति द्वारा श्री मती किरण चंदवानी जी के नेतृत्व में पंथी गायन पेश

कर शमा बांध दिया। पहले दिन क्रमबध जातीय विषमता के विशेष संदर्भ में भारत में नाटक और फिल्में विषय पर संवाद हुआ। जिसकी अध्यक्षता बी एस पी के महाप्रबंधक श्री एल उमाकांत ने की। मुख्य अतिथि श्री सवी सावरकर प्रोफेसर नई दिल्ली ने कहा ः मूलनिवासी परिवार में महिलाओं की भागीदारी बराबर की होती है और यही उसकी ताकत है। श्री सुनील रामटेके, श्री मती अंजू मेश्राम, लार्ड बुद्धा चेनल के डायरेक्टर श्री सुधीर मेश्राम, श्री सुन्दर लाल टाकभावरे के पत्र का पाठन श्री संजी खुदशाह द्वारा भी विचार प्रस्तुत किये गये ।कार्यक्रम का संचालन श्री एस के केसकर व धन्यवाद ज्ञापन श्री एफ आर जनार्दन द्वारा किया गया। इसके बाद संजीव जायसवाल की फिल्म शूद्रा द राइसिंग का प्रदर्शन किया गया।

दूसरे दिन इतिहास में मूलनिवासियों के साहित्य को हाशिए में रखने के बाद भी शोषण के खिलाफ उसकी धार तेज है विषय पर संवाद हुआ, जिसकी प्रस्तावना श्री संजीव खुदशाह ने दी। दिल्ली से आए मूलनिवासी लेखक श्री शील बोधी, चंद्रपुर के श्री एल के मंडावी, रायपुर के श्री विष्णु बघेल, आदिवासी सत्ता के संपादक श्री के आर शाह ने अपने अपने विचार रखे। संचालन श्री विश्वास मेश्राम ने किया। इसके बाद श्री बीजू टोप्पो की फिल्म " प्रतिरोध " एवं श्री गौतम घोष की फिल्म " पार " का प्रदर्शन किया गया।
आखिरी दिन रविवार को सामाजिक परिवर्तन में लोक कलाओं की भूमिका और चुनौतियाँ विषय पर संवाद हुआ।डॉ जय प्रकाश साव, श्री सवी सावरकर, श्री एल के मंडावी, श्री निसर अली, श्री सुधीर मेश्राम, श्री राममोहन कश्यप , श्री एफ आर जनार्दन आदि ने बहस में हिस्सा लिये । संचालन श्री राकेश बोम्बार्डे ने किया। मूल निवासियों का कविता पाठ भी हुआ। शाम को फिल्म " जय भीम कामरेड " का प्रदर्शन हुआ। कार्यक्रम को सफल बनाने में श्री विश्वास मेश्राम के नेतृत्व में समस्त सामाजिक संगठन एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं का योगदान रहा।श्री अरविंद रामटेके , श्री प्रदीप सोमकुवर ,श्री जी डी राउत आदि के प्रयास को भुलाया नहीं जा सकता ।

प्रेस विज्ञप्ति　　　　　　　　　दिनॉंक– **14 05 2013**

गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर **6** में **484** वें गुरू वंदना के अवसर पर टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम संपन्न" गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर **6** भिलाई में **13** मई **2013** को **484** वें गुरू वंदना के अवसर पर श्री प्रमोद कुमार सोनवानी जी ,बी एच ई एल भोपाल कर्मी एवं वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता ने " लोक कला तब से अब तक " विषय पर अपने अनुभव के

टिप्स प्रदान किये। उन्होंने बताया कि कला मनुष्य की अंर्तनिहित विशेष गुण है, जिसे वह अपनी विचार के माध्यम से, अभिव्यक्ति द्वारा, विभिन्न कार्यो के माध्यम से प्रदर्शित करते हुये आम जनों को प्रभावित करता है। जो कला ज्यादा से ज्यादा लोगों को प्रभावित करता है, उतना ही ज्यादा लोक प्रिय बन जाता है।ऐसा व्यक्ति आम जनों से हट कर खास जनों की श्रेणी में देखा जाता है।कला की आकार व प्रकार विभिन्न परिस्थितियों में विभिन्न प्रकार के हो सकते हैं।कलाकार अपनी कला के माध्यम से अपनी बात को, अपनी विचार को आम जनों तक पहुँचाने का प्रयास करता है। इससे विचारधारा की लहर सी बनती जाती है।सृष्टि के सृजन के साथ ही भोक्ता भाव से प्रेरित विचारधारा व साक्षी भाव से प्रेरित विचारधारा की लहर चलती आ रही है। समय, काल व परिस्थिति के आधार पर दोनों लहर की विचारधारा एक दूसरे पर हावी होने की चेष्टा करते रहे हैं। भोक्ताभाव वाली विचारधारा से मनुष्य खुद के ही अनुभुति को प्राथमिकता देता है और साधारण तया अपने में ही केन्द्रित होने की चेष्टा करता है, जबकि साक्षीभाव के विचारधारा से व्यक्ति उदारवादी होने की तरफ बढ़ता है। मनुष्य ही नहीं बल्कि अन्य जीव जन्तु तथा प्रकृति के संचालन में व्यापक जानकारी रख कर सभी के अनुभुति को ध्यान में रख कर ही आचार विचार करता है।मनुष्य अपनी कला के माध्यम से इन्हीं दोनों में से एक विचारधारा को प्राथमिकता प्रदान करता है।

यह सिद्ध हो चुका है कि मानव एक सामाजिक प्राणी है।उसका अस्तित्व व्यक्तियों के समूह से जुड़ा होता है। मानव के प्रत्येक समूह की अपनी कोई न कोई पहिचान होती है। अपनी पहिचान में मामूली विभिन्नता होते हुये भी मोटे तौर पर भोक्ताभाव विचारधारा अथवा साक्षीभाव विचारधारा के साथ देखा जा सकता है। भोक्ताभाव से प्रेरित होने से समता, स्वतंता, बंधुत्व व न्याय को उतना महत्व नहीं मिल पाता जबकि साक्षीभाव मानवियता के इन तत्वों को विशेष मिलता है। प्रत्येक मानव समूह की अपनी विचारधाराओं प्रचारित प्रसारित करने का अपनी विशेष तरीका होती है। इन्हीं तरीका को लोक कला की संज्ञा दी जा सकती है। मनुष्य व जानवरों में एक विशेष फर्क देखा जा सकता है ः मनुष्य शुरू से ही श्रम को महत्व देते आया है, जबकि जानवर श्रम के प्रति अनभिक्ष होता है। ये अलग बात है कि जानवर अपनी जीवन निर्वाह के लिये भोजन की व्यवस्था अपने हिसाब से करते देखा जा है।लोक कला मुख्य रूप से श्रम से जुड़ी विधा है। कालांतर में इसक स्वरूप बदलते गया है।आवश्यकता आविष्कार की जननी होती है। लोक कला में भी समय के साथ परिवर्तन देखे जा सकते हैं।लोक कला तत्कालिन रीति रीवाज व परंपरा को प्रदर्शित करता है।गाने बजाने / नाचने आदि की लोक कला में समय व परिस्थिति के अनुरूप परिवर्तन होना प्रकृति के नियम के तहत ही है। श्रम से उपजी लोक कला में स्वाभाविक व प्राकृतिक विचारों का समावेश होता है, वही अवकास से उपजी लोक कलाओं में साधारण तया स्वाभाविकता व प्राकृतिकता का अभाव होता है।

वर्तमान के विश्वीकरण ने लोक कलाओं को अत्यधिक प्रभावित किया है। प्रिंट व इलेक्ट्रानिक्स मीडिया की भूमिका को लोक कला को परिपेक्ष में अत्यधिक रूप से परिवर्तन के लिये जिम्मेदार माना जा सकता है। लोक कला का स्वरूप बड़ी तेजी से सहजता व प्राकृतिकता को खोने जा रहा है। आधुनिकता व पूंजीवाद के चपेट में आते जा रहा है। लोक कलाओं का व्यापारीकरण शुरू हो चुका है। इतना ही नहीं लोक कला राजनीतिज्ञों के उपभोग की वस्तु बनती जा रही है निश्चित रूप से इससे लोक कला के प्रति आदर व सम्मान घटने का सिलसिला शुरू हो गया है। लोक कला का मूल स्वरूप प्रकृति व श्रम पर आधारित विचारधारा, जो मानव मानव के बीच प्रेम व भाईचारा बनाये रखने की है। इस पर चिंतन करने की आवश्यकता है। जांति- पांति, ऊंच- नीच, अंध-विश्वास, रूढ़ीवाद जैसी अप्राकृतिक विचारधाराओं का लोक कलाओं के माध्यम से बढ़ना/ बढ़ाना मानवता के लिये सबसे बड़ी चुनौती नजर आती है। भारतीय संविधान के मानवीय प्रावधानों से नाखुश तबके के लोग अपनी सारी ताकत को झोंक कर अप्राकृतिक, असत् विचारधाराओं का लहर बनाने में नजर आते हैं। ऐसी परिस्थिति में विभिन्न मानवतावादी संतों व महात्माओं के विचारधाराओं को लोक कलाओं के माध्यम से जन जन तक पहुॅचाने का प्रयास करना होगा। भ्रम व भय की स्थिति को स्पष्ट करना होगा तभी लोक कलाओं की सार्थकता सिद्ध होगी।

XXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXX

प्रेस विज्ञप्ति दिनॉक- **11 05 2013** गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर **6** में **483** वें गुरू वंदना के अवसर पर "टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्य क्रम संपन्न" गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर **6** भिलाई में **6** मई **2013** को **483** वें गुरू वंदना के अवसर पर श्री सुरसेन कुर्रे जी ,भिलाई इस्पात संयंत्र कर्मी एवं वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता ने '' सुरक्षित निवेश एक बेहतर विकल्प '' विषय पर अपने अनुभव के टिप्स प्रदान किये। उन्होंने बताया कि जीवन में सुरक्षा का विशेष महत्व होता है। बचपने में बच्चे के सुरक्षा के लिये मॉ बाप का विशेष प्रयास होता है। होश संभलते ही बच्चे भी अपनी सुरक्षा के बारे में सोचना व उस पर अमल करना शुरू कर देते हैं। सुरक्षा का आकार व प्रकार निश्चित नहीं होता। जिंदगी के हर पग पर, हर दृष्टि से सुरक्षा का मायने होता है ।संयमित व संतुलित जीवन की पद्धति ही सुरक्षा का आधार होता है। अल्प कालीन व दीर्घकालीन सुरक्षा की सोच सबके दिलो दिमाक में रहती ही है। इतना जरूर है कि इसका अनुपात मनुष्य के आचार विचार व परिस्थिति पर आधारित होता है। वर्तमान की सुरक्षा के साथ ही भविष्य की सुरक्षा पर भी सोच जरूर होता है। अन्य बातों के अलावा जीवन में आर्थिक- परिस्थितियॉं मानव

के जीवन जीने के स्तर को अत्यधिक रूप से प्रभावित करती है। भारतीय परिवेश में आर्थिक सामाजिक परिस्थितियॉं में व्यापक उतार चढ़ाव देखे जा सकते हैं। सिंधु घाटी की सभ्यता पर आधारित तत्कालीन आर्थिक -सामाजिक परिस्थितियॉं, जिस समय भारत "सोने की चिड़ियॉ "के नाम से विश्व में जाना जाता था। विदेशी आर्यो के भारत आगमन के बाद भारत की आर्थिक- सामाजिक परिस्थितियॉं तो एकदम बदली नजर आती है। विदेशी आर्यो द्वारा प्रतिपादित वर्ण व्यवस्था व जाति व्यवस्था की अमानवीय नीति ने भारत की आर्थिक - सामाजिक परिस्थिति को झकझोर कर रख दिया। भारत के मूल निवासियों के सारे मानवीय अधिकार छीन लिये गये, उनको गुलामी व लाचारी के जीवन जीने पर मजबूर कर दिया गया। ऐसे परिस्थिति में तो दीमाग का काम करना भी बंद हो जाता है। अनेकों संघर्षो के बाद भारतीय संविधान के लागू होने से भारत के मूल निवासियों को अपना खोया हुआ मानवीय अधिकार पुनः मिल पाया।आज मूल निवासी अपनी वर्तमान भविष्य की आर्थिक परिस्थिति पर चिंतन करने लगे हैं ।मूल निवासियों में ज्यादा तर लोग अशिक्षित हैं और शारीरिक मेहनत कर अपनी रोजी रोटी का निर्वहन करते हैं। बहुत ही कम लोग नौकरी चाकरी व व्यवसाय में लगे नजर आते हैं। इन्हें वर्तमान के साथ ही भविष्य की चिंतायें हरदम सताये रहती है, क्योंकि इनके पूर्वजों को सदियों से छला गया था । अपनी गाढ़ी कमाई को कहीं भी निवेश करने के पहले ठंडे दिमाक से सोचने की आवश्यकता है।आज लुटेरों की संख्या बढ़ती ही जा रही है। मुफ्त में खाने वाले कल भी थे, आज तो मिडिया का दुरूपयोग किसी से छिपा नहीं है। बेहतर हिम्मत व बेहतर दिमांक आज की आवश्यकता है।आज हमारे देश में वैश्विक बाजार आ जाने के बाद कई तरह के बीमा कंपनी मनी लेंडिंग इत्यादि आ गई है ।अब जब कि रिजर्व बैंक बार बार आम निवेशको को यह सूचना समाचार पत्रों के माध्यम से देते आ रही है कि सरकार पीपीएफ, वी पी एफ या पोस्ट आफिस के माध्यम से **8.50** से **10.00** प्रतिसत तक ब्याज देती है। अगर कोई कंपनी **15** से **20** प्रतिसत ब्याज देती है, तो उस पर सोच समझ कर पैसा लगाना चाहिये, क्यों कि इस तरह के कंपनी कभी भी बंद हो सकती है।न ही सेबी या रिजर्व बैंक इस तरह के कंपनी पर अपना मोहर लगाती है।कई बीमा कंपनी **20** प्रतिसत कमीशन काटने के बाद पैसा निवेश करती है, **5** साल बाद पता करने से वह पैसा आधी रह जाता है।सोने का सिक्का लेने पर उसमें भी मेकिंग चार्ज के नाम पर लुट है।अतः अपनी गाढ़ी मेहनत की कमाई को सही जगह किसी जानकार व्यक्ति से सलाह ले कर ही निवेश करनी चाहिये।अगर सोने में निवेश करना है, तो सुरक्षित निवेश के रूप में पेपर गोल्ड या गोल्ड ईटीएफ के रूप में लिया जा सकता है ताकि वक्त में कभी भी भुनाया जा सकता है ।

इस अवसर पर श्री सुरसेन कुर्रे जी का स्वागत श्री व्ही डी बंधे जी ने चंदन का टीका लगा कर किया। गुरू प्रसाद श्री मती रेशम कुर्रे जी के परिवार की ओर से आयोजित की गई।

इसी कड़ी में '' अगला टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम '' गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर **6** भिलाई मे **484** वीं गुरू वंदना के अवसर पर दिनॉक **13** मई **2013** शाम **6.30** बजे संपन्न होगा, जिसमें समस्त आम जन आमंत्रित हैं ।

नोट ः साथियों हमें नयी दिशा में भी सोच पैदा करना चाहिए। सतनाम को परिभाषित करने की दिशा में प्रयास करना चाहिए। सतनाम क्या है ? सत का स्वरूप कैसा होता है ? सत का पेड़ कैसे लगाये ? प्रेम दया करूणा क्षमा विनय और शील जैसे विषयों पर विस्तार से चर्चा होनी चाहिये। ये सब अलग अलग कैसे पैदा होते है ? इनका भाव व स्वरूप कैसा होता है ? इन विषयों पर सतसंग आयोजित हो। एक एक विषय पर टिप्स तैयार किया जाय और इन विषयों पर सन्तों की वाणियॉ संगहित किया जाय तो उत्तम होगा। हम जल्दी ही साहित्य और संस्कृति पर सम्मोलन आयोजित करने जा रहे है ताकि *सिद्धान्त, समन्वय और संघर्ष में की दिशा में एकरूपता* स्थापित हो सके आपका सहयोग वांछनीय है।
द्वारा ः चेयरमेन स्वागत

प्रेस विज्ञप्ति   दिनॉक– **01 05 2013**

गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर **6** में **482** वें गुरू वंदना के अवसर पर टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम संपन्न" गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर **6** भिलाई में **29** अप्रेल **2013** को **482** वें गुरू वंदना के अवसर पर श्री दीपक कुमार कोसले जी ,वरिष्ठ अनुभाग अभियंता (सिगनलिंग) रेलवे व वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता ने '' बलों का बल मनोबल '' विषय पर अपने अनुभव के टिप्स प्रदान किये।उन्होंने बताया कि मनोबल को बलों का बल की संज्ञा दी जाय तो कोई अति संयोक्ति नहीं होगी।मानव जीवन में जीवन से मरण तक सदैव दो प्रकार की प्रक्रिया मानव मस्तिस्क को प्रभावित करते रहता है ः पहला मनोबल का बढ़ना व दूसरा मनोबल का गिरना ।मानव अपनी ज्ञान इंद्रियों ः ऑख, कान, नाक, जीभ व त्वचा के माध्यम से वाह्य गतिविधियों की जानकारी प्राप्त करता है।इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त जानकारियों से मन (जिसको छठवां

इंद्रि भी कहा जाता है) प्रभावित होता है ः या तो मनोबल बढ़ता है या फिर मनोबल गिरता है ।शारीरिक बल की तुलना में मनोबल कई गुना ज्यादा होता है, जो स्वयं सिद्ध है। कोई भी सुखद घटना मनोबल को बढ़ाता है वही दुखद घटना मनो बल को गिराता है। हालाकि हर घटना को देखने का नजरिया हर किसी का अलग अलग होता है। इतिहास की जानकारी भी मनोबल को प्रभावित करती है ।मानव इतिहास की जानकारियॉ, आदि मानवों का प्रयास जिससे सिद्ध हो पाया कि - "आवश्यकता ही

आविष्कार की जननी है।" आज भी हर परिस्थिति में हमारी मनोबल को बढ़ाती रहती है ।
तब से अब तक मानव का क्रमिक विकास होते आ रहा है और यह प्रक्रिया कल भी जारी रहेगा। मानव विकास की कड़ी में शिक्षा की अहम भूमिका रही है।इसी के आधार पर ही आज विकसित देश / विकसित समाज , विकासशील देश/ विकासशील समाज व अविकसित देश /अविकसित समाज पूरे विश्व में नजर आता है ।जीवन के हर क्षेत्र में प्रत्येक व्यक्ति की समान भागीदारी से किसी भी देश का संपूर्ण विकास संभव होता है ।जो भी देश आज विकास में पीछे नजर आते है , उनकी कुछ न कुछ अपनी कहानी है।आज भी हमारा देश विकसित देश की श्रेणी में नहीं पहुँच पाया है, इसके कारण को आज की तारीख में जानना व उस पर चिंतन आवश्यक हो जाता है।हमारे देश में सदियों से मनोबल को गिराने का कुत्सित प्रयास होते आ रहा है।एक जमाने में संपूर्ण विश्व भारत को सोने की चिड़िया के नाम से जानता था। निश्चित ही सिंधु घांटी की सभ्यता का इतिहास भारतीयों के मनोबल को आज भी बढ़ाता है।स्व. जवाहर लाल नेहरू जी ने अपनी पुष्तक "भारत एक खोज " में स्पष्ट रूप से बताया है कि विदेशी आर्यो के आगमन से भारत देश के गौरवशाली सभ्यता को काफी ठेस पहुँचा।आर्यो ने इस देश के गौरवशाली सभ्यता को नष्ट करने का काम किया ।आज इस देश में वर्ण ब्यवस्था व जाति ब्यवस्था भी उन्हीं की देन है।भाग्य व भगवान की आड़ में , भ्रम व भय पैदा कर इस देश के मूल निवासियों का मनोबल को गिराया गया।भारत में अनेक शासक आते व जाते गये, किसी ने भारत के बिगड़ी दशा पर चिंतन नहीं किया।अगर किसी ने भारत की अमानवीय दशा पर चिंतन किये, तो वे हैं इस देश के मानवतादी संत व महापुरूष।बुद्ध ,कबीर ,नानक , रविदास , महावीर आदि न जाने कितने संतों व महात्माओं ने अपनी पूरी जिंदगी मानव के मनोबल को उठाने का प्रयास करते रहे ।अंतिम शासक अंग्रेज ः बांबे, कलकत्ता व मद्रास प्रेसीडेंसी बना कर वर्षो तक शासन करते रहे ।अठारवी व उन्नीसिवी सदी में ब्यापक उथल पुतल नजर आती है।संतों व महात्माओं के जन क्रान्ति ने विशेष रंग दिखाया ।छत्तीसगढ़ की भूमि में गुरू घासीदास जी द्वारा चली ः "मनखे मनखे सब एक हैं "व "जमीन उनकी जो उसकी रखवाली करे" जन आंदोलन ने तो कलकत्ता पेसिडेंसी के कानून कायदे को बदल कर रख दिया ।सन् 1825 में अंगेजों द्वारा सर्व प्रथम जारी शिक्षा सेक्यूलर का कानून निश्चित ही गुरू घासीदास जी द्वारा सन् 1820 से 1830 तक चलाये गये बौद्धिक क्रान्ति (Intelectual War) का ही असर है।सबके लिये शिक्षा का कानून बनने से आम जनों का मनोबल स्वतः बढ़ गया।इसके बाद अनेक आंदोलन चलते रहे, जिससे लोगों के मनोबल में इजाफा होता रहा।इसी कड़ी में सन् 1919 का प्रथम भारत अधिनियम व सन् 1935 का द्वितीय भारत अधिनियम के बाद देश का आजाद होना व 26 जनवरी सन् 1950 में भारतीय संविधान का देश में लागू होने से भारतीय नागरिकों का मनोबल अचानक ही बढ़ गया।मनोबल क्यों नहीं बढ़ेगा, भारतीय संविधान ने तो वे सब कुछ ः देश के समस्त नागरिक को समता, स्वतंत्रता, बंधुत्व व न्याय की गारंटी दे दिया जिसके लिये भारतीय नागरिक वर्षो से तरसते रहे हैं।भारतीय संविधान की रक्षा करना हम सबकी जिम्मेदारी बन जाती क्योकि

खतरा बाहर से नहीं बल्कि हमारे ही देश के कुछ मुट्ठी भर असमतावादियों से है। हम सदैव कोशिष करे कि स्वयं का, परिवारका, समाज व देश का मनोबल किसी भी हालत में गिरने ने पाये ।

इस अवसर पर श्री दीपक कुमार कोसले जी का स्वागत श्री मोहन लाल भतरिया जी ने चंदन का टीका लगा कर किया। गुरू प्रसाद श्री राम फल पूर्णा जी, श्री प्रदीप कौशिक जी व श्री दीपक कोसले जी के परिवार की ओर से आयोजित की गई।

इसी कड़ी में '' अगला टिप्स ऑफ दी फिल्ड कार्यक्रम '' गुरू वंदना केन्द्र सतनाम भवन सेक्टर 6 भिलाई मे **483** वीं गुरू वंदना के अवसर पर दिनॉक **6** मई **2013** शाम **6.30** बजे संपन्न होगा , जिसमें समस्त आम जन आमंत्रित हैं ।

1

lruke iFk vkj ckck x# ?kklhnkl % lex eY;kdu

'kk/k lkjk'k द्वारा डा. अरविंद जांगड़े

^^ekuork ie Hk;Å cd.Bh]
ukfg r dg Nkj bd eBhAA

iFk 'kCn dh C;RifÙk iFk 'kCn l gh gbl gA ;| rk iFk dk vFk gkrk g| jkLrk ;k Mxj ftle ykxk d LFky 'kjhj pkg &vupkg ;k=k djrk gA tcfd iFk ,d ,lk fu;kftr jkLrk g ftle 'kjhj d lkFk eu Hkh pyrk g ;k dg fd eu d dkj.k ru pyrk gA lruke iFk ,d ,lk gh opkfjd jkLrk g] tk Ny&iip] vkMcj] #f<okn] vKkurk] Åp&uhp] Hkn&Hkko] jkx&}"k] tkrh; oeuL; vkfn eukfodkjk l Åij mBkdj 0;fDr dk lR;&Kku dh vkj ;k=k djkrk gA lruke iFk dh mRifÙk o bld vu;kf;;k d fo"k; e ;g 'kdk cjkcj mBrh jgh g fd D;k lruke iFk dk lc/k doy ,d lenk; ;k tkfr fo'ks"k l g\ ;k lruke iFk ogn #ik vkj vFkk e Hkh gA fuf.pr gh NÙkhlx< e lruke iFk dh C;k[;k djr le; ;gh vueku yxk;k tkrk g fd bldk lc/k doy NÙkhlx< e ckgY;rk l fuokl dju okyh ,d tkfr fo.k.k ^lrukeh l gh gA tcfd lruke iFk d vu;k;h NÙkhlx< l dgh vf/kd Hkkjr d vU; jkT;k jktLFkku] itkc] gfj;k.kk] mÙkjinsk] vle] cxky vkfn ikrk e fuokl djr gA lruke dk iFk d #i e lxfBrd vk/kkj inku dju oky iFke lr ohjHkku dk tUe mÙkj Hkkjr d itkc ukjuky e tUe lor 1600 dk fctlj uked LFkku e gvk FkkA lr ohjHkku lr nkn d ledkyhu FkA ;| jnklh ijijk e lr Å/kknkl th d f'k"; FkA bl dkj.k Lo;| dk ^Å/kk (या उदा) dk nkl^ ?kkf"kr djr gA x# d egRo dk lokifj ekudj ml ^ekfyd dk gDe^ Lohdkj djr gA budh lrukeh ijijk d vulkj ijekRek dk uke gh ^lRruke gA bl dkj.k bUgku viu iFk dk ^lrukeh ekuk gA lruke iFk d ey ekU;rkvk e lcl cMh ckr g og g ekuorkA ekuo dk ekuo le>dj mld lkFk lekurk dk 0;ogkj djuk gh bl iFk dk ie[k mí'; jgk gA lkekftd fo"kerk d fy, l?k"k d Loj vkj fonkg dh j.kuhfr lruke

iFk d lk/kdk e gh fn[kykbZ nrh gA NÙkhlx< e lruke iFk dh LFkkiuk dju oky egku lr ckck x# ?kklhnkl th jg gA o Hkkjrh; lr ijijk d vrxr doy lr gh ugh vfir ,d nk'kfud] lekt 'kk/kd] lR; d ifr lefir ,o xjhc] nfyr] fiNMk d ifr gk jg vU;k;] vR;kpkj d icy fojk/kh ,d Økfrdkjh egkiq#"k Hkh FkA ftudk tUe NÙkhlx< d fxjk/kijh^ uked xke e 18 fnlcj lu 1756 bZ- dk gvk FkkA x# ?kklhnkl vU; lrk dh Hkkfr ,dkxh ugh gA o thou d leLr {k=k e vugn ukn ctku oky Økfrdkjh lr gA o doy minsk gh ugh nr cfYd thou dh fo.kky j.kHkfe e lR; d lukifr cudj reke folxfr;k d f[kykQ l?k"k dk sk[kukn djr g, Lo;a urRo Hkh djr gA mud O;fDrRo dh ;g lcl vyx o egRoi.k fo.k".krk gA o Hkkjrh; lr ijijk e fojy lr g tk Økfr vkj skfr ,d lkFk djr gA mud lQy urRo e gh NÙkhlx< e fo'kky lruke vkUnkyu [kMk gvk ftll reke vjktd O;oLFkk tkrh; }sk] ?k.kk] Hkn&Hkko] Nvk&Nr] mp&uhp] vU;k;] vR;kpkj lc dk feVk dj Hk;jfgr] skks"k.keDr] lekurk vkj Hkkbpkjk ;Dr ub lekt dh LFkkiuk gbA x# ?kklhnkl d vkUnkyu dk y{; ekuoh; eY; vkj lekurk ij vk/kkfjr u, lekt dh LFkkiuk djuk FkkA x# ?kklhnkl lekt d fo?kVudkjh व्यfDr;k l l?k.k ,o funku d fy, ge.kk fpfrr ,o euuskhy jgr FkA ftl dN vYifoodh ykxk u fdlh jgL;e;h ;k peRdkfjd skfDr lk/kuk dk #i n fn;k gA njvly x# ?kklhnkl ftu i.uk l ge.kk my>r o t>r jg g] ml vkt rd fdlh u le>u dk bekunkj i;kl ugh fd;k FkkA ;gk rd fd mud f}rh; i=r x# ckydnkl d ckn mud oskt Hkh bl ee dk le>u e Hkkjh Hky fd; gA vu;kf;;k e Kku vkj fsk{kk dh deh d dkj.k skk;n olk lHko Hkh gk fdUr vksp;k rk ;g g fd nskh vkj fonskh y[kd Hkh viu vfHktkR; LoHkko d dkj.k ^lruke d ee dk ugh le> ik, vkj dVuhfrd rkj ij x# ?kklhnkl dk ^egr] ^nkl] rkf=d ;k ^peRdkjh ckck cuk fn;A x# ?kklhnkl u viu vkUnkyu vkj minskk l rkRdkyhu lekt e bl dnj Hkkbpkjk] lfgs.krk vkj ufrdrk dk cht ck fn;k Fkk fd ykxk d eu e vijk/k d ifr ?k.kk gku yxh FkhA rHkh rk vxt fo}ku pkYl xk.V 1870% u x# ?kklhnkl dk rkRdkyhu e/;insk oreku NÙkhlx< dk ^^vksp;^^ ekuk FkkA mud lkekftd vkUnkyu dk NÙkhlx< d tuekul ij bruk xgjk iHkko iMk fd NÙkhlx< d rkRdkyhu vxt dfeuj fe- ,xU; (1820) u NÙkhlxf<;k d ufrd pfj=r dh [kyh iskla bu skCnk e dh Fkh & ^^ ;g Hkkx Hkkjr d vU; {k=k dh ryuk e e> J.Brj irhr gkrk gA ;gk dkb cMh vijk/k luu dk ugh feyrkA [kkldj gR;k vkj pkjh yxHkx cn gk x, gA ykx bru bekunkj g fd dgh dkb NkVk&ekVk vijk/k gvk Hkh rk vijk/kh LoPNk l vijk/k Lohdkj dju yx gA lR; d ifr vkLFkk rth l c<u yxk gA ;g lc x# ?kklhnkl d dkj.k gh gk jgk gA**

mijkä okD;k dk i<u d ckn fu"p; iod dgk tk ldrk g fd x# ?kklhnkl lk/kkj.k l gh vlk/kkj.k 0;fDrRo d /kuh C;fDr FkA ftl nsku dk fodkl x# ?kklhnkl u NÙkhlx< vpy d bl NkV Hk&Hkkx e fd; vkt ij fo"o d fy, ,d ij.kknk;d lo0;kih fl)kr gk ldrk gA x# ?kklhnkl flQ 0;ogkjoknh ,o rF;kUòशणवादी lr ugh Fk] vfir egku nk"kfud Hkh FkA ftUgku fo"o d fy, जाति विहीन समाज की स्थापना के दिशा में ,d u;k ^ekMy^ fn;kA mud lkj fl)kr leL;k l igy lek/kku iLrr dju oky gA

x# ?kklhnkl gekj fy, ituh; ugh vfir vudj.kh; gA o itk&ikB d lDr fojk/kh FkA blhfy, mUgku ej.kklék fLFkfr e viu Lotuk] vu;kf;;k dk Li"V vkn'k fn; fd eju d ckn mudk dkbl vo'k"k u j[kk tk; o ykd Kkuh FkA o tkur Fk ;fn mudk eB vkfn cuk;k x;k rk ykx fQj vkLFkk o श्रद्धा d uke l itk&ikB d Qj e my> tk,xA

x# ?kklhnkl lrk d bfrgkl e ehy d iRFkj gA o vU; Hkkjrh; lrk l foy{k.k gA nlj lr min'k nu] dk0; fy[ku] MkVu&QVdkju e yx jg vkj dFkuh rd gh fleV dj jg x;A ijUr ?kklhnkl d dFkuh vkj djuh e cMh lkE;rk g o flQ dgdj gh pi ugh jg djd Hkh fn[kk fn;A o ,l bfrgkl i#"k g tk bfrgkl dk cnyu dh {kerk j[kr gA x# ?kklhnkl lcdk lgt Kku dk ekx crkr gA pfd mUgku viu lkj fpru e b'oj d vfLrRo dh ppk dgh ugh dh g] vr% mud dk0;e; ok.kh e Hkh Hkfä dh foopuk dh lHkkouk gh ugh curhA o dchj] ukud] jnkl vkfn fux.kh lr dfo;k l Hkh vkx pydj viuk LFkku r; djr gA x# ?kklhnkl dk doy fonkgh] Økfrdkjh vFkok efr Hktd lr dg nu l gh mudh vkykpuk ijh ugh gk tkrhA x# ?kklhnkl u /ke vFkok thou d {k= e doy fonkg d fy, fonkg ugh fd;k vfir ijEijk vkj #f<;k d cU/ku l fonkg d ihN mudk ,d fuf'pr thoukn'k vkj eY;&fl)kr FkkA o vketu dh thou dh vuHkfr o ihMk dk l/kku dju oky igy lr g tk thou d gj igy dk viu fopkjk l mf}Xu djr gA okLro e mudh ok.kh vkj thou e tk v'k"k euflLork vkj Økfrdkfjrk feyrh g mld ihN x# ?kklhnkl dh xgu ekuoh; d#.kk gA

Hkkjrh; lekt dh Lrjh; 0;oLFkk vkj mll mit nk"kk d lEi.k fujkdj.k dk mik; x# ?kklhnkl d fpru e vklkuh l fey tkr gA lgh eY;kdu d vHkko e ; lkj fl)kr ogh d ogh g vFkok FkkM&cgr eY;kdu dk i;kl fd;k x;k Hkh rk iPN fn'kk e tkdjA efr itk dk fojk/k] eknd n0;k d lou o eklkgkj dk fu"k/k] lR;kpj.k ij cy] vfglkRed iofÙk d leFkd gku d dkj.k vc rd d eY;kdu e x# ?kklhnkl dk fux.k lr ijijk d okgd lr d #i e gh n[kk x;k gA tcfd x# ?kklhnkl ml ijijk dk fuogu djr g; viu ekfyd fopkjk vkj nk'kfud fl)krk l dchj] jnkl] ukud] nknn;ky vkfn lrk l vkx fudydj egf"k pokd] eD[kfy xk'ky] egkohj tu] xkre c) tl nk'kfudk d led{k Bgjr gA iLrr 'kk/k ic/k e eu x# ?kklhnkl dk doy ,d fof'k"V lr d #i e gh u n[kdj lr

ijijk d vrxr gh fopkj djr g, ,d lekt oKkfud] nk'kfud ,o eukoKkfud vfHkO;fä d #i e n[ku dk i;kl fd;k gA tk lekurk] lektokn vkj mPprj ufrd eY;k dh j{kk d fy, ge'kk ifrcð jg gA x# ?kklhnkl d nk'kfud fopkjk e vud Hkfedk, feyrh gA mue i;klr fojk/kkHkkl Hkh gk ldrk g ij mUgku viu vuHko dh ixk<rk vkj fu'Nyrk d }kjk dêj nk'kfudk dk fn[kkb nu okyh njkjk dk Hkj fn;k g vkj o furkr thoUr vkj ik.koUr thou&n'ku dk fuek.k dj ldu e lQy g, gA vU; nk'kfudk o lrk d thoun'kuk dh ryuk e x# ?kklhnkl dk thoun'ku ykdn'ku gA ;g doy ifMrk] ;kfx;k] /;kfu;k d rd o /;ku&;kx dk fo"k; ugh g] ;g l[ke; thou thu dk ljy lk/ku g vkj vPN ukxfjd dh vkpkj&lfgrk Hkh gA x# ?kklhnkl d O;fäRo dk lokf/kd mYy[kuh; x.k mudh ekfydrk gA o Lok/khu fpUrk d i#"k Fk] vuHkoh ykd Kkuh FkA mudk Kku ikfFk;k dh udy ugh Fkk vkj u gh lu&lukb ckrk dk cey Hk.Mkj FkkA o fuj{kj gku d ckotn okf.k;k l gh llkj d Kku vkj vfHky[k dh ckr dg x;A mUgku viu ;x vkj vku oky ;xk&;xk d fy, ftu ckrk dk mi;kxh vkj thounkf;uh le>k mudk li.k vkRefo'okl d lkFk cfgpd dgkA viu fopkjk d fy, dkb vk/kkj ugh <<] fdlh xFk dk iek.k ugh pkgk] o ftu ckrk dk lkp] vuHko fd;] tku vkj le> fd ;g lR; g] okLrfod g] mldh lR;rk vkj okLrfodrk gh mudk ie[k vk/kkj cuk rFkk vuHko iek.kA ;g rk lofofnr g fd x# ?kklhnkl fuj{kj FkA vr% mudk /ke o n'ku xFkk d voykdu dk rk loky gh ugh mBrk ftlls o fdlh link; d ifr viuh Lohdfr tkfgj djrA vc rd ykx ;gh dgr jg fd x# ?kklhnkl fuxq.kh iFk ijijk d ,d'ojoknh] }rokn h ;k fd v}rokn h fopkj/kkjk d O;fäRo gA x# ?kklhnkl u dHkh ;g nkok ugh fd;k fd o ,d nk'kfud Fk vkj u gh mUgku dHkh

;g dgk fd o ve[k link; d erk d ioäk gA mudk fdlh lr ;k egkRek l nh{kk yu ;k x# cuku dh ckr Hkh lk Qhlnh >Bh gA ,l e o fdlh ,d okn d vu;k;h ;k leFkd gk gh ugh ldrA mudk lkjk Kku ekfyd vkj vuHkotU; Kku FkkA blhfy, o dgr g&

trd tkur gkol vkrdp y dfgc] tuyk r ub tkur vl vkyk dfgc >u vFkkr ftruh lR; tkudkjh vkidk irk g mru dk gh ilkj dj] ftld fo"k; e vki ugh tkur ,lh ckrk dk fdlh l uk dgA x# ?kklhnkl cgJr Fk vkj ukuk erkoyEch ykxk vkj urkvk d lRlx l] ykd O;kogkjk l] vkRe fpru l mUgku viu vuHko llkj dk leð fd;k FkkA o fdlh flðkr dk doy ijEijk l xg.k djuk mfpr ugh le>] tc rd fd dkb Hkh fopkj ;k n'ku mudh viuh vuHkfr e <ydj mudk Lohdh; ugh cu x;kA mudk ;gh vuHko tfur o O;kogkfjd Kku gh lR; Kku gA x# ?kklhnkl ukfLrd O;fä Fk] mudh ukfLrdrk vlfnX/k gA D;kfd mud tlk fonkg /ke o b'oj e vkLFkkoku O;fä dj gh ugh ldrkA mUgku /ke d ml "kM;= dk Bhd igpkuk tk eu";&eu"; d chp Hkn dh nhokj [kMk djrk g] ukuk v/kfo'okl dk tUe nrk g] vkj eu"; dk lR; d lU/kku l jkdrk gA bu reke folxfr;k d n[kr g, o ,d ,l jkg] iFk vFkok /ke dh LFkkiuk fd;] tk 'kr ifr'kr oKkfud o

O;kogkfjd gA bl nf"V l n[k rk ekuo tkfr d mRFkku d fy, vfre lR; ge x# ?kklhnkl d n'kuk e feyrh gA x# ?kklhnkl dk iFk ykxk dk b'ojokn l eä dj 'kq) Kkuokn dh vkj y tku okyk ,d oKkfud iFk gA bl iFk dh fopkj/kkjk dk ey #i e le> yu ij O;fä Kku dh ml voLFkk rd igp tkrk g fd ml b'oj tl fdlh dkYifud 'kfä dh thou e vko';drk gh ekye ugh iMrhA

x# ?kklhnkl v/kfo'okl] vkMcj] vykfddrk] Åp&uhp] Hkn&Hkko l eä lejlrk ij vk/kkfjr ,d u, lekt dh jpuk djuk pkgr FkA ml lekt d fy, o ,d ,l oKkfud /ke [kMk djuk pkgr Fk ftldh cfu;kn lR; o ulfxd gkA x# ?kklhnkl eu"; dk eu"; d #i e n[kuk pkgr FkA ml mlh #i e ifrf"Br djuk pkgr FkA ge dg ldr g fd x# ?kklhnkl dk fopkj eu"; d] eu"; l ,d ntk uhp jgu d nnl l mRié gkrk g] vkj ml leku ekuo cuku] ,o mldh vKkurk dk nj dj oKkfud nf"V nu e gh viuh lkjh Åtk [kpk dj nrk gA

Hkkjrh; lr ijijk d bfrgkl e x# ?kklhnkl tl k O;fäRo dkb nljk ugh gvkA mud O;fäRo dk fdlh Hkh ipfyr vfHkO;fä d ek/;e l mn?kkfVr ugh fd;k tk ldrkA o vkn'k vkj ufrd eY;k dh LFkkiuk doy min'k o ok.kh d gokb ckrk l ugh dj jg FkA mudh ok.kh o gLrde e v{kjl% lkE; FkkA dgr de djr vf/kd (work more talk less) Fk vkj ;gh ckr mUgk vU; lrk l vf/kd iklfxd o ykdfi; cukrk gA

x# ?kklhnkl dk lruke vknkyu ,o mud leLr dk;k dk lex eY;kdu dju ij rhu ie[k ckr lkeu vkrh gA x# ?kklhnkl HkyhHkkfr tku pd Fk fd ; /ke vkj lekt dk jkx fdruk l?kkrd vkj Hkh"k.k g] ftl fIQ ijke'k o ijgtk d lgkj bykt dj ikuk ukeefdu gA ;fn chekjh lk/kkj.k iV nn gk rc rk fxyhfeêh d ykFkM l gh dke py ldrh g fdUr chekjh tc lkl o gn; dh gk rk og feêh fdlh dke dh ugh gk ldrhA Bhd mlh idkj ekuo 'kjhj d lkl&lkl e cl] gn; d xgjkb;k rd mrj pd Åp&uhp o Nvk&Nr dh Hkkouk dk bykt mldh mRifÙk dh ifØ;k dk rkM fcuk lHko ugh FkkA vr% x# ?kklhnkl u tkfr dk rkMdj vLi';rk d tM dk dkVu dk iFke i;kl fd;kA mud lruke vknkyu dh ;g foy{k.k o vio ckr FkhA nljh ie[k ckr /ke o ek{k d pDdj e iM ykxk dk vkfFkd o ekufld 'kk"k.k d ek;ktky l eä djuk FkkA x# ?kklhnkl u n[kk fd /ke d vkM e ,d ox /kuh gk jgk g rk nljk ox fu/kuA rFkkdfFkr /ke o mud b'oj] cã] ek{k] iu%tUe vkfn d v/kj [kkg e turk HkVd jgh gA ftl Kku d idk'k e ykuk vR;r vko';d FkkA vr% x# ?kklhnkl u viu okf.k;k l mijkä 'kCnk dh lR;ij[k O;k[;k iLrr fd;; vkj lR; Kku l lk{kkRdkj djku dk i;kl

fd;kA mUgku ,d ,l n'ku dk tUe fn;k tk vc rd d fodflr lkj n'kuk dk

ihN NkM tkrk gA

rhljh ckr ;g Fkh fd Hkkjyk 'kklu dky d igy NÙkhlx< e nfyrk dh cgr ekyxtkjh FkhA ftl ukxij o dékkt d ckã.kk u yVdj dCtk dj fy;k Fkk] dk tupruk tkxrdj iu% gkfly fd;A bl idkj l ge ikr g fd x# ?kklhnkl dk lruke vknkyu /kkfed vktknh dk] lkekftd lekurk dk vkj vkfFkd mékfr dk lQy vknkyu jgk gA
lruke iFk vkj ckck x# ?kklhnkl d lex eY;kdu d fupkM l ;g ckr lkeu vkrh g fd lruke iFk v/kfo'okl] ik[kM] vkMcj] b";k&}"k] Åp&uhp] Hkn&Hkko l ij lekurk ij vk/kkfjr ,d fodklkUe[kh oKkfud iFk g ,o x# ?kklhnkl ;kxh] rkf=d] pEkRdkjh ckck] vykfdd i#"k] b'oj vkfn dN Hkh ugh gA o lk/kkj.k ekuo gh Fk] cl mudk dk;l vlk/kkj.k Fkk] tk mUg ;xk&;xk rd thor cuk, j[kxkA mijkä rhuk fcUnvk d vkykd e ge dg ldr g fd x# ?kklhnkl ,d lr] ,d nk'kfud vkj ,d vknkyudkjh rhuk #ik e ,d lkFk jg gA pfd ;s rhuk x.k ,d lPp x# e vklkuh l lekfgr gk tkr gA vr% x# ?kklhnkl flQ x# g] ej vkj vkid ugh] fdlh tkfr vFkok lenk; d ugh] NÙkhlx< o Hkkjr d ugh] ij ekuo tkfr d] lep fo'o d x#A